bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 अंक – 1

सुराज की विचार यात्रा

वर्तमान कमल ज्योति

वर्तमान कमल ज्योति

वन्दे मातरम्!

भारतीय जनता पार्टी, उ0प्र0

Seminar
MODI@20
Main Speaker
Shri Sunil Bansal Ji
Gen. Secretary Organisation - BJP U.P.
Date 5th August 2022 Time: 5 pm

SEMINAR
MODI@20
BHARTIYA JANATA PARTY

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक

श्री स्वतंत्र देव सिंह

सम्पादक

अरुण कान्त त्रिपाठी

प्रबन्ध सम्पादक

राजकुमार

प्रकाशक

प्रो0 श्याम नन्दन सिंह

पृष्ठ संयोजक

ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग

लखनऊ – 1

फोन :– 0522–2200187

फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्
शस्यशामलां मातरम् ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीं
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीं
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीं
सुखदां वरदां मातरम् ॥ 1 ॥
वन्दे मातरम्

अमृत रस बरसाने वाला....!

सम्पादकीय

देश अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण करके 15 अगस्त 2022 को त्याग, तपस्या, बलिदान, से आगे बढ़कर सेवा सुशासन संकल्प पथ पर चलकर विकास की अमूर्त ध्वजा संग विजयी विश्व तिरंगा प्यारा के शिखर को पा लेगा। लेकिन, इस शिखर पर हमको संकल्प लेना होगा कि, आजादी की जो धरोहर हमारे पूर्वजों, स्वतंत्रता सेनानियों, अमर शहीदों और अनगिनत देश भक्तों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर हमे सौंपा है उसे हम अपने हृदय मे संजोकर ईमानदारी और निष्ठा के साथ राष्ट्र के लिए सदैव तत्पर रहें। राष्ट्र उन्नति और सर्वशक्तिमान करने के लिये गतिशील रहें। यही अमृत महोत्सव की असली अभिलाषा है।

भारत की स्वतंत्रता के लिये किन–किन चुनौतियों का सामना देश को करना पड़ा और कैसा–कैसा आत्मत्याग भारत के लोगों को करना पड़ा यह देश की वर्तमान पीढ़ी को ज्ञात नहीं हैं। वस्तुतः स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रमों भी अब स्वतंत्रता इतिहास का हिस्सा नहीं हैं जिससे युवा पीढ़ी क्रांति–कर्तव्य की महान शिला पर अमर बलिदानियों की गाथा के बारे में नहीं जानती है। युवा पीढ़ी देश की मुद्रा पर छपने के कारण महातमा गांधी को पहचानती है परन्तु जानती नहीं हैं। स्वतंत्रता के संदर्भ में संघर्ष की कहानी वर्तमान पीढ़ी को इतिहास में भी अप्राप्त है। जिसको आज जानना व बताना आवश्यक है।

हम इतना जानते हैं कि, 15 अगस्त 1947 को हिन्दुस्थान को वर्षों की परतंत्रता के बाद स्वतंत्रता प्राप्त हुई। असंख्य बलिदानों के बाद देश ने स्वतंत्रता की सुबह देखी। इतिहास के अनगिनत किस्सों को सहेजे देश की स्वतंत्रता को 15 अगस्त 2022 को 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस बदिानी विरासत की गाथा से वर्तमान भारत को बताने के लिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 12 मार्च 2021 को अमदाबाद में आजादी के अमृत महोत्सव का उद्घाटन किया था क्योंकि,उसी दिन भारत में नमक सत्याग्रह आरंभ हुआ था। उस भारतीय विरासत का यह अमृत महोत्सव अगले वर्ष 15 अगस्त 2023 तक चलता रहेगा। शौर्य–शांति–प्रतीक का तिरंगा 365 दिनों तक अमृत रस बरसाता रहेगा।

आजादी के इस अमृत महोत्सव को मनाने का एकमात्र कारण ही यही है। लेकिन, देश में कुछ असहिष्णु लोग भी हैं जिनको लगता है कि भारत क्यों पराधीनता को याद कर रहा है पर ये लोग भूल जाते हैं कि, हिन्दुस्थान की स्वतंत्रता के लिये जिन राष्ट्रपुत्रों ने अपने प्राणों का आत्मसर्ग किया उनको याद करने का यह अप्रतिम क्षण है। आजादी के 75 वर्ष पूण हो रहे हैं तो यह भी युवा पीढ़ी को बताना जरूरी है कि इन 75 वर्षो में भारत ने क्या उपलब्धियां प्राप्त की हैं।

हमारा देश आज एक युवा देश है। देश की बहुसंख्य आबादी युवा है लेकिन, 18–35 वर्ष आयु के यह युवा स्वतंत्रता के संघर्ष और लोकतंत्र के महत्व को बेहतर तरीके से नहीं जानते हैं। विचारधाराओं के गहन अंधकार में विभाजित युवा पीढ़ी गुमराह होकर ऐसे दोराहे पर आकर खड़ी है जिसको देश और इतिहास से जोड़ना आवश्यक है। क्यों कि जिस देश की पीढ़ी अपना इतिहास भूल जाती है उस देश का भूगोल अकसर बदल जाता है। आज जब देश आजादी का महात्सव मना रहा है और अपने घरों पर आन–बान और शान का प्रतीक तिरंगा लहरा रहा है तब देश आर्थिक–सामाजिक रूप से भी महाशक्ति के रूप में परिलक्षित हो रहा है। जिसमें देश के हर नागरिक का हाथ है। बस इसको और मजबूती प्रदान करना है।

आज भारत अपने स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, तो रायसीना हिल्स पर स्थित देश की सर्वोच्च गद्दी पर संथाल जनजाति की एक आदिवासी बेटी आदरणीय द्रौपदी मुर्मू के आसीन होने से देश उसी आनंद की अनुभूति कर रहा है। अमृत महोत्सव की बेला पर देश की होनहार युवा पीढ़ी उसी इग्लैंड में खेलकर स्वर्ण बटोरकर देश को अमृतपान करा रही है। आइये! स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले क्रांतिकारियों, वीरांगनाओं और अपने वीर अमर सपूतों को हम पुनः याद करें और देश को प्रगति पथ पर लेकर चलें। जय हिंद–जय भारत

akatri.t@gmail.com

भारत कृषि क्षेत्र में आत्म निर्भर हो : मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सहकारी संघवाद की भावना में सभी राज्यों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की, जिसने भारत को कोविड –19 महामारी से उभरने में मदद की। नीति आयोग की गवर्निंग काउंसिल की सातवीं बैठक को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा, "हर राज्य ने अपनी ताकत के अनुसार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कोविड के खिलाफ भारत की लड़ाई में योगदान दिया। इसने भारत को विकासशील देशों के लिए एक वैश्विक लीडर के रूप में देखने के लिए एक उदाहरण के रूप में उभरने का नेतृत्व किया। "महामारी की शुरुआत के बाद से गवर्निंग काउंसिल की यह पहली फिजिकल बैठक थी। बैठक में 23 मुख्यमंत्रियों, तीन उप राज्यपालों और दो प्रशासकों और केंद्रीय मंत्रियों ने भाग लिया। अपने उद्घाटन भाषण में पीएम मोदी ने कहा कि भारत की संघीय संरचना और सहकारी संघवाद कोविड–19 संकट के दौरान दुनिया के लिए एक मॉडल के रूप में उभरा। उन्होंने कहा कि भारत ने दुनिया के विकासशील देशों को एक शक्तिशाली संदेश दिया है कि संसाधनों की कमी के बावजूद चुनौतियों से पार पाना संभव है। पीएम मोदी ने कहा कि इसका श्रेय राज्य सरकारों को जाता है, जिन्होंने राजनीतिक लाइनों में सहयोग के माध्यम से लोगों को सार्वजनिक सेवाओं के जमीनी स्तर पर वितरण पर ध्यान केंद्रित किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उपरोक्त सभी मुद्दों के महत्व पर प्रकाश डाला। विशेष रूप से कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर और वैश्विक नेता बनने के लिए आधुनिक कृषि, पशुपालन और खाद्य प्रसंस्करण पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारत की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि शहरी भारत के प्रत्येक नागरिक के लिए जीवन की सुगमता, पारदर्शी सेवा वितरण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर तेजी से शहरीकरण कमजोरी के बजाय भारत की ताकत बन सकता है। पीएम मोदी ने वर्ष 2023 में भारत के G20 प्रेसीडेंसी के बारे में भी बात की और इसे दुनिया को यह दिखाने का एक अनूठा अवसर बताया कि भारत सिर्फ दिल्ली नहीं है। यह देश का हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश है। पीएम ने कहा कि हमें G20 के इर्द–गिर्द एक जन आंदोलन विकसित करना चाहिए। इससे हमें देश में उपलब्ध सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं की पहचान करने में मदद मिलेगी। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि इस पहल से अधिकतम संभव लाभ प्राप्त करने के लिए राज्यों में G20 के लिए एक समर्पित टीम होनी चाहिए।

शिक्षा नीति, फसल विविधीकरण एजेंडा में शामिल

इस वर्ष, शासी परिषद ने चार प्रमुख एजेंडा मदों पर चर्चा की:

- फसल विविधीकरण और दलहन, तिलहन और अन्य कृषि–वस्तुओं में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
- स्कूली शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) का कार्यान्वयन।
- उच्च शिक्षा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कार्यान्वयन।
- शहरी शासन

सांस्कृतिक राष्ट्र ही आजादी की नींव

अरुण कान्त त्रिपाठी

राष्ट्रवाद का उदय क्यों हुआ और इससे जुड़े कार्य क्या हैं। बल्कि हमारे लिए राष्ट्र के बारे में सावधानीपूर्वक सोचना और इसके साथ इसमें निहित अधिकारों और आकांक्षाओं की परख करना महत्त्वपूर्ण होगा। राष्ट्र शब्द के प्रति आम समझ क्या है? अगर मोटे तौर पर राय लें तो हम इस सिलसिले में देशभक्ति, राष्ट्रीय ध्वज, देश के लिए बलिदान जैसी बातें सुनेंगे। गणतंत्र दिवस की परेड भारतीय राष्ट्र का बेजोड़ प्रतीक है। यह प्रतीक सत्ता और शक्ति के साथ विविधता की भावना को भी प्रदर्शित करता है। कई लोग इस विविधता को भारतीय राष्ट्र से जोड़ते हैं। लेकिन अगर हम गहराई में जाने की कोशिश करें तो पाएँगे कि राष्ट्र की सुस्पष्ट और सर्वमान्य परिभाषा करना आसान नहीं है।

पिछली कई शताब्दियों के दौरान राष्ट्र एक ऐसे सम्मोहक राजनीतिक सिद्धांत के रूप में उभरा है जिसने इतिहास रचने में योगदान किया है। इसने उत्कृष्ट निष्ठाओं के साथ–साथ गहरे विद्वेषों को भी प्रेरित किया है। इसने जनता को जोड़ा है तो विभाजित भी किया है। इसने अत्याचारी शासन से मुक्ति दिलाने में मदद की तो इसके साथ यह विरोध, कटुता और युद्धों का कारण भी रहा है। साम्राज्यों और राष्ट्रों के ध्वस्त होने का यह भी एक कारण रहा है। संघर्षों ने राष्ट्रों और साम्राज्यों की सीमाओं के निर्धारण–पुनर्निर्धारण में योगदान किया है। आज भी दुनिया का एक बड़ा भाग विभिन्न राष्ट्र–राज्यों में बंटा हुआ है। हालाँकि राष्ट्रों की सीमाओं के पुनर्संयोजन की प्रक्रिया अभी खत्म नहीं हुई है और मौजूदा राष्ट्रों के अंदर भी अलगाववादी संघर्ष आम बात है।

लेकिन राष्ट्र बड़े–बड़े साम्राज्यों के पतन में हिस्सेदार भी रहा है। यूरोप में बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ऑस्ट्रियाई–हंगेरियाई और रूसी साम्राज्य तथा इनके साथ एशिया और अफ्रीका में ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच और पुर्तगाली साम्राज्य के विघटन के मूल में राष्ट्र ही था। भारत तथा अन्य पूर्व उपनिवेशों के औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्र होने के संघर्ष भी राष्ट्रीय संघर्ष थे। ये संघर्ष विदेशी नियंत्रण से स्वतंत्र राष्ट्र–राज्य स्थापित करने की आकांक्षा से प्रेरित थे।

राष्ट्र जनता का कोई आकस्मिक समूह नहीं है। लेकिन यह मानव समाज में पाए जाने वाले अन्य समूहों अथवा समुदायों से अलग है। यह परिवार से भी अलग है। परिवार तो प्रत्यक्ष संबंधों पर आधारित होता है जिसका प्रत्येक सदस्य दूसरे सदस्यों के व्यक्तित्व और चरित्र के बारे में व्यक्तिगत जानकारी रखता है। यह जनजातीय, जातीय और अन्य सगोत्रीय समूहों से भी अलग है। इन समूहों में विवाह और वंश परंपरा सदस्यों को आपस में जोड़ती हैं। इसीलिए यदि हम सभी सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से नहीं भी जानते हों तो भी जरूरत पड़ने पर हम उन सूत्रों को ढूँढ निकाल सकते हैं जो हमें आपस में जोड़ते हैं। लेकिन राष्ट्र के सदस्य के रूप में हम अपने राष्ट्र के अधिकतर सदस्यों को सीधे तौर पर न कभी जान पाते हैं और न ही उनके साथ वंशानुगत नाता जोड़ने की जरूरत पड़ती है। फिर भी राष्ट्रों का वजूद है, लोग उनमें रहते हैं और उनका आदर करते हैं। आमतौर से यह माना जाता है कि, राष्ट्रों का निर्माण ऐसे समूह द्वारा किया जाता है जो फल या भाषा अथवा धर्म या फिर जातीयता जैसी कुछेक निश्चित पहचान का सहभागी होता है। लेकिन ऐसे निश्चित विशिष्ट गुण वास्तव में हैं ही नहीं जो सभी राष्ट्रों में समान रूप से मौजूद हों। कई राष्ट्रों की अपनी कोई एक सामान्य भाषा नहीं है। कनाडा का उदाहरण सामने है। कनाडा में अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषा–भाषी लोग साथ रहते हैं। भारत में भी अनेक भाषाएँ हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में और भिन्न–भिन्न समुदायों द्वारा बोली

जाती हैं। बहुत से राष्ट्रों में उनको जोड़ने वाला कोई सामान्य धर्म भी नहीं है। नस्ल या कुल जैसी अन्य विशिष्टताओं के लिए भी यही कहा जा सकता है।

तब वह क्या है, जो राष्ट्र का निर्माण करता है? राष्ट्र बहुत हद तक एक 'काल्पनिक' समुदाय होता है, जो अपने सदस्यों के सामूहिक विश्वास, आकांक्षाओं और कल्पनाओं के सहारे एक सूत्रा में बंधा होता है। यह कुछ खास मान्यताओं पर आधारित होता है जिन्हें लोग उस समग्र समुदाय के लिए गढ़ते हैं, जिससे वे अपनी पहचान कायम करते हैं। आइए, हम राष्ट्र के बारे में लोगों की कुछ मान्यताओं को पहचानने और समझने की कोशिश करें।

राष्ट्र सबका है।

भारत को आजादी ही सांस्कृतिक राष्ट्र पर मिली। भारत का लोकतंत्र अगर टिक पाया तो उसकी वजह भी सांस्कृतिक राष्ट्र ही है। हमारे पड़ोसी देशों में यह नहीं है, हम वहां का हाल देख रहे हैं। लोकतंत्र बिना किसी संस्कति के नहीं रह सकती। सांस्कृतिक राष्ट्र तो भारत के आत्मा में है। महाभारत से लेकर वेदों तक यह मिल जाएगा, लेकिन कौटिल्य ने इसे बहुत अच्छे लिखा। लेकिन उसका सार बहुत उदार है। वह सब कल्याण के लिए था।

हमें यह समझना होगा की राज्य के लिए जरूरी क्या है। भूमि, लोग और संप्रभुता, ये तीन चीजें राज्य के लिए जरूरी हैं। 1947 से पहले के भारत में संप्रभुता तो नहीं थी। राज्य अलग थे, उनके राजा अलग थे, लेकिन हम एक थे तो सांस्कृतिक राष्ट्र की वजह से ही। ऐसे यह तो स्पष्ट है की भारत में सांस्कृतिक राष्ट्र नया नहीं है, ये पुनः एक जागरण काल है।

वास्तव में भारत का राष्ट्रवाद राजनीतिक नहीं, भौतिकवादी नहीं, सांस्कृतिक है और उस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सबसे पहली घोषणा श्री राम ने की थी। इसलिए वे राष्ट्र पुरुष हैं, केवल धार्मिक नहीं। श्री राम ने लंका जीत ली। अयोध्या वापसी की तैयारी होने लगी तो लक्ष्मण ने कहा, ''भैया अब सोने की लंका हमारी है–हम यहीं पर क्यों न रहें–अयोध्या जाने की क्या आवश्यकता है–तब श्री राम ने उत्तर दिया था:–

''अति स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''

भले ही लंका सोने की है–बहुत सम्पन्न है परन्तु मुझे अच्छी नहीं लग रही क्योंकि जननी जन्म भूमि मातृभूमि तो स्वर्ग से भी अधिक श्रेष्ठ होती है। यही है भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और उसके बाद के देश के पूरे इतिहास में इसी राष्ट्रवाद की झलक मिलती है। इसलिये विश्व में शायद कोई ऐसा देश नहीं जिसकी भौगोलिक सीमाएं हजारों वर्ष पहले के ग्रंथों में मिलती हैं। हजारों वर्ष पूर्व विष्णु पुराण में कहा है –

उत्तरम् यत् समुद्रस्य हिमाद्रे चैव दक्षिण
वर्षम् तद् भारत नाम भारती यत्र संतित
आसिन्धु सिन्धु पर्यन्तः यस्य भारत भूमिका
पितृभुः पुण्यभूश्चव स वे हिन्दुरिति स्मृत।।

इसी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का और विश्व मानवता का प्रभाव था कि दुनिया भर के सताए हुए लोग भारत में आए और उन्हें शरण दी गई। सबसे पहले पर्शिया पर आक्रमण हुआ तो पारसी अपनी पवित्र आग लेकर भारत आए तो सूरत में यादव राणा ने उनका स्वागत किया और वे मुख्य धारा में मिले। ऐसे कई देशों के सताए लोगों को भारत शरण देता रहा। सदियों की गुलामी के कारण जब भारत हीन भावना से त्रस्त हुआ तो स्वामी विवेकानंद ने उसी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से भारत को जगाने का प्रयत्न किया। प्रखर देशभक्ति, मातृभूमि के प्रति प्यार और चरित्र निर्माण का संदेश दिया। श्री राम ने एक आदर्श शासन व्यवस्था स्थापित की इसीलिए महात्मा गांधी जी ने भी राम राज्य की बात कही थी। मर्यादा निभाने के लिए राज सिंहासन को छोड़कर वनवास स्वीकार किया। यहां तक कहा ....

स्नेहम् दयाम् तथा सौख्यम् यदि व जानकीमपि
आराधनाय लोकस्य मुंचतो नास्ति मे व्यथा

इसलिये भारतीय चिंतन में राष्ट्र एक जीवमान, स्वयंभू सांस्कृतिक इकाई है, जबकि पश्चिम में राष्ट्र को राज्य मानकर एकमानकर एक राजनीतिक परिकल्पना मान लिया गया है। इस संदर्भ में देखें तो स्पष्ट होगा कि भारत सृष्टि का प्रथम राष्ट्र है। राष्ट्र के लिए आवश्यक चारों आधार देश, भूमि, जन और चेतना भारत में......अति प्राचीन काल से मौजूद रही है। अतः राष्ट्रीय आदर्शों और आकांक्षाओं की नींव के सुदृढ़ होते ही एक अजेय राष्ट्रशक्ति का उदय हो रहा है। इसके लिये केवल सारे समाज को अपने राष्ट्रीय जीवनोद्देश्य का ज्ञान करना होगा और हृदय में राष्ट्रभक्ति लिए युवाओं की टोलियां जब फिर से आगे बढ़ेंगी तो सभी संकटों को पराजित करके हमारा राष्ट्र विश्व विजयी बनेगा।

अपने घर और अपनों के घर पर, हमारा तिरंगा फहरें : नरेन्द्र मोदी

इस बार का स्वतंत्रता दिवस, जब भारत अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे करेगा। हम सभी बहुत अद्‌भुत और ऐतिहासिक पल के गवाह बनने जा रहे हैं। ईश्वर ने ये हमें बहुत बड़ा सौभाग्य दिया है। आप भी सोचिए, अगर हम गुलामी के दौर में पैदा हुए होते, तो, इस दिन की कल्पना हमारे लिए कैसी होती ? गुलामी से मुक्ति की वो तड़प, पराधीनता की बेड़ियों से आजादी की वो बेचौनी – कितनी बड़ी रही होगी। वो दिन, जब हम, हर दिन, लाखों–लाख देशवासियों को आजादी के लिए लड़ते, जूझते, बलिदान देते देख रहे होते। जब हम, हर सुबह इस सपने के साथ जग रहे होते, कि मेरा हिंदुस्तान कब आजाद होगा और हो सकता है हमारे जीवन में वो भी दिन आता जब वंदेमातरम और भारत माँ की जय बोलते हुए, हम आने वाली पीढ़ियों के लिए, अपना जीवन समर्पित कर देते, जवानी खपा देते।

31 जुलाई यानी आज ही के दिन, हम सभी देशवासी, शहीद उधम सिंह जी की शहादत को नमन करते हैं। मैं ऐसे अन्य सभी महान क्रांतिकारियों को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जिन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

मुझे ये देखकर बहुत खुशी होती है, कि, आजादी का अमृत महोत्सव एक जन आंदोलन का रूप ले रहा है। सभी क्षेत्रों और समाज के हर वर्ग के लोग इससे जुड़े अलग–अलग कार्यक्रमों में हिस्सा ले रहे हैं। ऐसा ही एक कार्यक्रम इस महीने की शुरुआत में मेघालय में हुआ। मेघालय के बहादुर योद्धा, यू. टिरोत सिंह जी की पुण्यतिथि पर लोगों ने उन्हें याद किया। टिरोत सिंह जी ने खासी हिल्स पर नियंत्रण करने और वहाँ की संस्कृति पर प्रहार करने की अंग्रेजों की साजिश का जमकर विरोध किया था। इस कार्यक्रम में बहुत सारे कलाकारों ने सुंदर प्रस्तुतियाँ दी। इतिहास को जिंदा कर दिया। इसमें एक carnival का आयोजन भी किया गया, जिसमें, मेघालय की महान संस्कृति को बड़े ही खूबसूरत तरीके से दर्शाया गया। अब से कुछ हफ्ते पहले, कर्नाटका में, अमृता भारती कन्नडार्थी नाम का एक अनूठा अभियान भी चलाया गया। इसमें राज्य की 75 जगहों पर आजादी के अमृत महोत्सव से जुड़े बड़े भव्य कार्यक्रम आयोजित किये गए। इनमें कर्नाटका के महान स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने के साथ ही स्थानीय साहित्यिक उपलब्धियों को भी सामने लाने की कोशिश की गई।

इसी जुलाई में एक बहुत ही रोचक प्रयास हुआ है जिसका नाम है – आजादी की रेलगाड़ी और रेलवे स्टेशन। इस प्रयास का लक्ष्य है कि लोग आजादी की लड़ाई में भारतीय रेल की भूमिका को जानें। देश में अनेक ऐसे रेलवे स्टेशन हैं, जो, स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास से जुड़े हैं। आप भी, इन रेलवे स्टेशनों के बारे में जानकार हैरान होंगे। झारखंड के गोमो जंक्शन को, अब आधिकारिक रूप से, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जंक्शन गोमो के नाम से जाना जाता है। जानते है क्यों? दरअसल इसी स्टेशन पर, कालका मेल में सवार होकर नेताजी सुभाष, ब्रिटिश अफसरों को चकमा देने में सफल रहे थे। आप सभी ने लखनऊ के पास काकोरी रेलवे स्टेशन का नाम भी जरुर सुना होगा। इस स्टेशन के साथ राम प्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्लाह खान जैसे जांबांजों का नाम जुड़ा है। यहाँ ट्रेन से जा रहे अंग्रेजों के खजाने को लूटकर वीर क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों को अपनी ताकत का परिचय करा दिया था। आप जब कभी तमिलनाडु के लोगों से बात करेंगे, तो आपको, थुथुकुडी जिले के वान्ची मणियाच्ची जंक्शन के बारे में जानने को मिलेगा। ये स्टेशन तमिल स्वतंत्रता सेनानी वान्चीनाथन जी के नाम पर है। ये वही स्थान है जहाँ 25 साल के युवा वान्ची ने ब्रिटिश कलेक्टर को उसके किये की सजा दी थी।

ये लिस्ट काफी लम्बी है। देशभर के 24 राज्यों में फैले ऐसे 75 रेलवे स्टेशनों की पहचान की गई है। इन 75 स्टेशनों को बहुत ही खूबसूरती से सजाया जा रहा है। इनमें कई तरह के कार्यक्रमों का भी आयोजन हो रहा है। आपको भी समय निकालकर अपने पास के ऐसे ऐतिहासिक स्टेशन पर जरुर

जाना चाहिए। आपको, स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे इतिहास के बारे में विस्तार से पता चलेगा जिनसे आप अनजान रहे हैं। मैं आसपास के स्कूल के विद्यार्थियों से आग्रह करूँगा, टीचर्स से आग्रह करूँगा कि अपने स्कूल के छोटे–छोटे बच्चों को ले करके जरुर स्टेशन पर जाएँ और पूरा घटनाक्रम उन बच्चों को सुनाएँ, समझाएँ।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत, 13 से 15 अगस्त तक, एक Special Movement – 'हर घर तिरंगा– हर घर तिरंगा' का आयोजन किया जा रहा है। इस अभियान का हिस्सा बनकर 13 से 15 अगस्त तक, आप, अपने घर पर तिरंगा जरुर फहराएं, या उसे, अपने घर पर लगायें। तिरंगा हमें जोड़ता है, हमें देश के लिए कुछ करने के लिए प्रेरित करता है। मेरा एक सुझाव ये भी है, कि 2 अगस्त से 15 अगस्त तक, हम सभी, अपनी Social Media Profile Pictures में तिरंगा लगा सकते हैं। वैसे क्या आप जानते हैं, 2 अगस्त का हमारे तिरंगे से एक विशेष संबंध भी है। इसी दिन पिंगली वेंकैया जी की जन्म–जयंती होती है जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय ध्वज को design किया था। मैं उन्हें, आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। अपने राष्ट्रीय ध्वज के बारे में बात करते हुए मैं, महान क्रांतिकारी Madam Cama को भी याद करूँगा। तिरंगे को आकार देने में उनकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही है।

आजादी के अमृत महोत्सव में हो रहे इन सारे आयोजनों का सबसे बड़ा सन्देश यही है कि हम सभी देशवासी अपने कर्तव्य का पूरी निष्ठा से पालन करें।

आजादी के अमृत महोत्सव में हो रहे इन सारे आयोजनों का सबसे बड़ा सन्देश यही है कि हम सभी देशवासी अपने कर्तव्य का पूरी निष्ठा से पालन करें। तभी हम उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों का सपना पूरा कर पायेंगे। उनके सपनों का भारत बना पाएंगे। इसीलिए हमारे अगले 25 साल का ये अमृतकाल हर देशवासी के लिए कर्तव्यकाल की तरह है। देश को आजाद कराने, हमारे वीर सेनानी, हमें, ये जिम्मेदारी देकर गए हैं, और हमें, इसे पूरी तरह निभाना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, कोरोना के खिलाफ हम देशवासियों की लड़ाई अब भी जारी है। पूरी दुनिया आज भी जूझ रही है। Holistic Healthcare में लोगों की बढ़ती रुचि ने इसमें सभी की बहुत मदद की है। हम सभी जानते हैं कि इसमें भारतीय पारम्परिक पद्धतियाँ कितनी उपयोगी हैं। कोरोना के खिलाफ लड़ाई में, आयुष ने तो, वैश्विक स्तर पर, अहम भूमिका निभाई है। दुनियाभर में आयुर्वेद और भारतीय औषधियों के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। ये एक बड़ी वजह है कि Ayush Exports में record तेजी आई है और ये भी बहुत सुखद है कि इस क्षेत्र में कई न, Start-Ups भी सामने आ रहे हैं। हाल ही में, एक Global Ayush Anvestment और Annovation Summit हुई थी। आप जानकर हैरान होंगे, कि इसमें, करीब दस हजार करोड़ रूपए के Anvestment Proposals मिले हैं। एक और बड़ी अहम बात ये हुई है, कि कोरोना काल में, औषधीय पौधों पर research में भी बहुत वृद्धि हुई है। इस बारे में बहुत सी Research Studies Publish हो रही हैं। निश्चित रूप से एक अच्छी शुरुआत है।

देश में विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधों और जड़ी–बूटियों को लेकर एक और बेहतरीन प्रयास हुआ है। अभी–अभी जुलाई महीने में Andian Virtual Herbarium को संनदबी किया गया। यह इस बात का भी उदाहरण है, कि कैसे हम, Digital World का इस्तेमाल अपनी जड़ों से जुड़ने में कर सकते हैं। Andian Virtual Herbarium, Preserved Plants या plant parts की Digital Amages का एक रोचक संग्रह है, जो कि Web पर, Freely Available है। इस Virtual Herbarium पर अभी लाख से अधिक Specimens और उनसे जुड़ी Scientific Anformation उपलब्ध है। Virtual Herbarium में, भारत की , Botanical Diversity की समृद्ध तस्वीर भी दिखाई देती है। मुझे विश्वास है Andian Virtual Herbarium, भारतीय वनस्पतियों पर research के लिए एक important resource बनेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हम हर बार देशवासियों की ऐसी सफलताओं की चर्चा करते हैं जो हमारे चेहरे पर मीठी मुस्कान बिखेर देती हैं। अगर कोई success story, मीठी मुस्कान भी बिखेरे, और स्वाद में भी मिठास भरे, तब तो आप इसे जरुर सोने पर सुहागा कहेंगे। हमारे किसान इन दिनों शहद के उत्पादन में ऐसा ही कमाल कर रहे हैं। शहद की मिठास हमारे किसानों का जीवन भी बदल रही है, उनकी आय भी बढ़ा रही है। हरियाणा में, यमुनानगर में, एक मधुमक्खी पालक साथी रहते हैं **श्री सुभाष कंबोज जी** – सुभाष जी ने वैज्ञानिक तरीके से मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने केवल छः बॉक्स के साथ अपना काम शुरू किया था। आज वो करीब दो हजार बॉक्सेस में मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। उनका शहद कई राज्यों में supply होता है। जम्मू के पल्ली गाँव में विनोद कुमार जी भी डेढ़ हजार से ज्यादा कॉलोनियों में मधुमक्खी पालन कर रहे हैं। उन्होंने पिछले साल, रानी मक्खी पालन का प्रशिक्षण लिया है। इस काम से, वो, सालाना 15 से 20 लाख रूपए कमा रहे हैं। कर्नाटक के एक और किसान हैं – मधुकेश्वर हेगड़े जी। मधुकेश्वर जी ने बताया कि उन्होंने, भारत सरकार से 50 मधुमक्खी कॉलोनियों के लिए subsidy ली थी। आज उनके पास 800 से ज्यादा कॉलोनियां हैं, और वो कई टन शहद बेचते

हैं। उन्होंने अपने काम में innovation किया, और वो जामुन शहद, तुलसी शहद, आंवला शहद जैसे वानस्पतिक शहद भी बना रहे हैं। मधुकेश्वर जी, मधु उत्पादन में आपके innovation और सफलता, आपके नाम को भी सार्थक करती है।

साथियो, आप सब जानते हैं कि, शहद को, हमारे पारंपरिक स्वास्थ्य विज्ञान में कितना महत्व दिया गया है। आयुर्वेद ग्रंथों में तो शहद को अमृत बताया गया है। शहद, न केवल हमें स्वाद देता है, बल्कि आरोग्य भी देता है। शहद उत्पादन में आज इतनी अधिक संभावनाएं हैं कि professional पढ़ाई करने वाले युवा भी, इसे, अपना स्वरोजगार बना रहे हैं। ऐसे ही एक युवा हैं – यू.पी. में गोरखपुर के निमित सिंह। निमित जी ने बी.टेक किया है। उनके पिता भी डॉक्टर हैं, लेकिन, पढाई के बाद नौकरी की जगह निमित जी ने स्वरोजगार का फैसला लिया। उन्होंने शहद उत्पादन का काम शुरू किया। Quality Check के लिए लखनऊ में अपनी एक लैब भी बनवाई। निमित जी अब शहद और Bee Wax से अच्छी कमाई कर रहे हैं, और अलग–अलग राज्यों में जाकर किसानों को प्रशिक्षित भी कर रहे हैं। ऐसे युवाओं की मेहनत से ही आज देश इतना बड़ा शहद उत्पादक बन रहा है। आपको जानकार खुशी होगी कि देश से शहद का निर्यात भी बढ़ गया है। देश ने National Beekeeping and Honey Mission जैसे अभियान चलाए, किसानों ने पूरा परिश्रम किया, और हमारे शहद की मिठास, दुनिया तक पहुँचने लगी। अभी इस क्षेत्र में और भी बड़ी संभावनाएं मौजूद हैं। मैं चाहूँगा कि हमारे युवा इन अवसरों से जुड़कर उनका लाभ लें और नई संभावनाओं को साकार करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, मुझे हिमाचल प्रदेश से **'मन की बात'** के एक श्रोता, श्रीमान आशीष बहल जी का एक पत्र मिला है। उन्होंने अपने पत्र में चंबा के **'मिंजर मेले'** का जिक्र किया है। दरअसल, मिंजर मक्के के फूलों को कहते हैं। जब मक्के में मिंजर आते हैं, तो मिंजर मेला भी मनाया जाता है और इस मेले में, देश भर के पर्यटक दूर–दूर से हिस्सा लेने के लिए आते हैं। संयोग से मिंजर मेला इस समय चल भी रहा है। आप अगर हिमाचल घूमने गए हुए हैं तो इस मेले को देखने चंबा जा सकते हैं। चंबा तो इतना खूबसूरत है, कि यहाँ के लोक–गीतों में बार–बार कहा जाता है।

"चंबे इक दिन ओणा कने महीना रैणा"।

यानि, जो लोग एक दिन के लिए चंबा आते हैं, वे इसकी खूबसूरती देखकर महीने भर यहां रह जाते हैं।

साथियो, हमारे देश में मेलों का भी बड़ा सांस्कृतिक महत्व रहा है। मेले, जन–मन दोनों को जोड़ते हैं। हिमाचल में वर्षा के बाद जब खरीफ की फसलें पकती हैं, तब, सितम्बर में, शिमला, मंडी, कुल्लू और सोलन में सैरी या सैर भी मनाया जाता है। सितंबर में ही जागरा भी आने वाला है। जागरा के मेलों में महासू देवता का आह्वाहन करके बीसू गीत गाए जाते हैं। महासू देवता का ये जागर हिमाचल में शिमला, किन्नौर और सिरमौर के साथ–साथ उत्तराखंड में भी होता है।

हमारे देश में अलग– अलग राज्यों में आदिवासी समाज के भी कई पारंपरिक मेले होते हैं। इनमें से कुछ मेले आदिवासी संस्कृति से जुड़े हैं, तो कुछ का आयोजन, आदिवासी इतिहास और विरासत से जुड़ा है, जैसे कि, आपको, अगर मौका मिले तो तेलंगाना के मेडारम का चार दिवसीय समक्का–सरलम्मा जातरा मेला देखने जरुर जाईये। इस मेले को तेलंगाना का महाकुम्भ कहा जाता है। सरलम्मा जातरा मेला, दो आदिवासी महिला नायिकाओं– समक्का और सरलम्मा के सम्मान में मनाया जाता है। ये तेलंगाना ही नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और आन्ध्र प्रदेश के कोया आदिवासी समुदाय के लिए आस्था का बड़ा केंद्र है। आँध्रप्रदेश में मारीदम्मा का मेला भी आदिवासी समाज की मान्यताओं से जुड़ा बड़ा मेला है। मारीदम्मा मेला जयेष्ठ अमावस्या से आषाढ़ अमावस्या तक चलता है और यहाँ का आदिवासी समाज इसे शक्ति उपासना के साथ जोड़ता है। यहीं, पूर्वी गोदावरी के पेद्धापुरम में, मरिदम्मा मंदिर भी है। इसी तरह राजस्थान में गरासिया जनजाति के लोग वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को 'सियावा का मेला' या 'मनखां रो मेला' का आयोजन करते हैं।

छत्तीसगढ़ में बस्तर के नारायणपुर का 'मावली मेला' भी बहुत खास होता है। पास ही, मध्य प्रदेश का 'भगोरिया मेला' भी खूब प्रसिद्ध है। कहते हैं कि, भगोरिया मेले की शुरूआत, राजा भोज के समय में हुई है। तब भील राजा, कासूमरा और बालून ने अपनी–अपनी राजधानी में पहली बार ये आयोजन किए थे। तब से आज तक, ये मेले, उतने ही उत्साह से मनाये जा रहे हैं। इसी तरह, गुजरात में तरणेतर और माधोपुर जैसे कई मेले बहुत

हमारे देश में अलग– अलग राज्यों में आदिवासी समाज के भी कई पारंपरिक मेले होते हैं। इनमें से कुछ मेले आदिवासी संस्कृति से जुड़े हैं।

मशहूर हैं। ‘मेले’, अपने आप में, हमारे समाज, जीवन की ऊर्जा का बहुत बड़ा स्त्रोत होते हैं। आपके आस–पास भी ऐसे ही कई मेले होते होंगे। आधुनिक समय में समाज की ये पुरानी कड़ियाँ ‘एक भारत–श्रेष्ठ भारत’ की भावना को मजबूत करने के लिए बहुत जरूरी हैं। हमारे युवाओं को इनसे जरुर जुड़ना चाहिए और आप जब भी ऐसे मेलों में जाएं, वहां की तस्वीरें सोशल मीडिया पर भी शेयर करें। आप चाहें तो किसी खास हैशटैग का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे उन मेलों के बारे में दूसरे लोग भी जानेंगे। आप Culture Ministry की website पर भी तस्वीरें नचसवंक कर सकते हैं। अगले कुछ दिन में Culture Ministry एक competition भी शुरू करने जा रही है, जहाँ, मेलों की सबसे अच्छी तस्वीरें भेजने वालों को इनाम भी दिया जाएगा तो फिर देर नहीं कीजिए, मेलों में घूमियें, उनकी तस्वीरें साझा करिए, और हो सकता है आपको इसका ईनाम भी मिल जाए।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपको ध्यान होगा, ‘मन की बात’ के एक Episode में मैंने कहा था कि भारत के पास Toys Exports में Powerhouse बनने की पूरी क्षमता है। मैंने Sports और Games में भारत की समृद्ध विरासत की खासतौर पर चर्चा की थी। भारत के स्थानीय खिलौने – परंपरा और प्रकृति, दोनों के अनुरूप होते हैं, Eco-friendly होते हैं। मैं आज आपके साथ भारतीय खिलौनों की सफलता को share करना चाहता हूँ। हमारे Youngsters, Start-ups और Entrepreneurs के बूते हमारी Toy Andustry ने जो कर दिखाया है, जो सफलताएँ हासिल की हैं, उसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। आज, जब भारतीय खिलौनों की बात होती है, तो हर तरफ, Vocal for Local की ही गूंज सुनाई दे रही है। आपको ये जानकर भी अच्छा लगेगा, कि भारत में अब, विदेश से आने वाले खिलौनों की संख्या, लगातार कम हो रही है। पहले जहाँ 3 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा के खिलौने बाहर से आते थे, वही अब इनका आयात 70 प्रतिशत तक घट गया है और खुशी की बात ये, कि इसी दौरान, भारत ने, दो हजार छःह सौ करोड़ रुपए से अधिक के खिलौनों को विदेशों में निर्यात किया है, जबकि पहले, 300–400 करोड़ रुपए के खिलौने ही भारत से बाहर जाते थे और आप तो जानते ही हैं कि ये सब, कोरोना काल में हुआ है। भारत के ज्वल सेक्टर ने खुद को Transform करके दिखा दिया है। Indian Manufacturers, अब, Indian Mythology, History और Culture पर आधारित खिलौने बना रहे हैं। देश में जगह–जगह खिलौनों के जो ब्सनेजमते हैं, खिलौने बनाने वाले जो छोटे–छोटे उद्यमी हैं, उन्हें, इसका बहुत लाभ हो रहा है। इन छोटे उद्यमियों के बनाए खिलौने, अब, दुनियाभर में जा रहे हैं। भारत के खिलौना निर्माता, विश्व के प्रमुख Global Toy Brands के साथ मिलकर भी काम कर रहे हैं। मुझे ये भी बड़ा अच्छा लगा, कि, हमारा Start-Up Sector भी खिलौनों की दुनिया पर पूरा ध्यान दे रहा है। वे इस क्षेत्र में कई मजेदार चीजें भी कर रहे हैं। बेंगलुरु में, Shumme (शूमी) Toys नाम का Start-Up Eco-friendly खिलौनों पर विबने कर रहा है। गुजरात में Arkidzoo (आर्किड्ज़ू) Company AR-based Flash Cards और AR-based Storybooks बना रही हैं। पुणे की Company] Funvention (फन्वेंशन) Learning, खिलौने और Activity Puzzl मे (पजल्स) के जरिये Science] Technology और डंजी में बच्चों की दिलचस्पी बढ़ाने में जुटी है। मैं खिलौनों की दुनिया में शानदार काम कर रहे ऐसे सभी Manufacturers को Start-Ups को बहुत–बहुत बधाई देता हूँ। आईये, हम सब मिलकर, भारतीय खिलौनों को, दुनियाभर में, और अधिक लोकप्रिय बनायें। इसके साथ ही, मैं, अभिभावकों से भी आग्रह करना चाहूँगा कि वे अधिक से अधिक भारतीय खिलौने, Puzzles और Games खरीदें।

साथियो, Classroom हो या खेल का मैदान, आज हमारे युवा, हर क्षेत्र में, देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। इसी महीने, PV Sindhu ने Singapore Open का अपना पहला खिताब जीता है। Neeraj Chopra ने भी अपने बेहतरीन प्रदर्शन को जारी रखते हुए World Athletics Championship में देश के लिए Silver Medal जीता है। Ireland Para Badminton International में भी हमारे खिलाड़ियों ने 11 पदक जीतकर देश का मान बढ़ाया है। Rome में हुए World Cadet Wrestling Championship में भी भारतीय खिलाड़ियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। हमारे एथलीट सूरज ने तो Greco-Roman Event में कमाल ही कर दिया। उन्होंने 32 साल के लंबे अंतराल के बाद इस Event में Wrestling का Gold Medal जीता है। खिलाड़ियों के लिए तो ये पूरा महीना ही ंबजपवद से भरपूर रहा है। Chennai में 44वें Chess Olympiad की मेजबानी करना भी भारत के लिए बड़े ही सम्मान की बात है। 28 जुलाई को ही इस Tournament का शुभारंभ हुआ है और मुझे इसकी Opening Ceremony में शामिल होने का सौभाग्य मिला। उसी दिन UK में Commonwealth Games की भी शुरुआत हुई। युवा जोश से भरा भारतीय दल वहाँ देश को Represent कर रहा है। मैं सभी खिलाड़ियों और Athletes को देशवासियों की ओर से शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे इस बात की भी खुशी है कि भारत FIFA Under 17 Women’s World Cup उसकी भी मेजबानी करने जा रहा है। यह ज्वनतदंउमदज अक्तूबर के आस–पास होगा, जो खेलों के प्रति देश की बेटियों का उत्साह बढ़ाएगा।

भारतीय प्रज्ञा के आधार पर हमें अपनी समस्या का समाधान खोजना होगा: वी0सतीश

प्रदेश प्रशिक्षण वर्ग, चित्रकूट

भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश का तीन दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग नानाजी देशमुख सभागार, चित्रकूट में सम्पन्न हुआ। राष्ट्रीय संगठक श्री वी सतीश जी ने वर्ग की प्रस्तावना रखते हुए कहा कि अनुशासित, देशव्यापी, संस्कारित, समर्पित कार्यकर्ताओं के निर्माण हेतु प्रशिक्षण अत्यंत अनिवार्य है। कोई विचार अच्छा तभी हो सकता है जब उस पर चलने वाले संस्कारित लोग हों। शरीर, मन, बुद्धि, संस्कार के माध्यम से ही हम अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं। भारतीय प्रज्ञा के आधार पर हमें अपने देश की समस्या का समाधान खोजने का प्रयास करना होगा। उन्होंने कहा हजारों वर्षों तक विदेशी आक्रांताओं के अधीन रहने के बाद भी भारत की राष्ट्रीयता जीवित रही, क्योंकि हमारा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद जीवित था।

प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, प्रदेश प्रभारी राधा मोहन सिंह, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री मुरलीधर राव, राष्ट्रीय संगठक वी सतीश जी और पार्टी के प्रदेश महामंत्री संगठन सुनील बंसल ने पंडित दीन दयाल उपाध्याय व डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के चित्र पर पुष्पार्चन व दीप प्रज्ज्वलन कर वर्ग का शुभारंभ किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह जी ने वर्ग के प्रारम्भ में अपने स्वागत भाषण में कहा कि प्रशिक्षण वह प्रयत्न होता है जिसके द्वारा कार्यकर्ता अपनी क्षमता तथा अपनी प्रतिभा को बढ़ाता है। इसके साथ ही वह एक विशेष दिशा मे अपनी प्रवृत्ति तथा उच्च भावना को भी उत्पन्न करता है। उन्होंने कहा प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सांगठनिक कार्यों मे कार्यकुशलता लाना है। प्रशिक्षण के द्वारा कार्यकर्ता में स्वयं को अपनी संस्था का अंग बनने की क्षमता आती है।

प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि मुरलीधर राव जी ने एकात्ममानववाद पर चर्चा करते हुए कहा कि हमारी विचारधारा, सिद्धांत, मौलिक दृष्टि, संगठन निर्माण, सामूहिकता के दृष्टि अन्य पार्टी के वैचारिक मूल्यों से अलग है। हमने पूंजीवाद, साम्यवाद की भावना को नकारते हुए एकात्म मानववाद एवं अंत्योदय की भावना को आत्मसात किया है। हमारा संघर्ष कभी भी धर्म और विज्ञान के बीच नहीं हुआ, अपितु हमारे धर्म में व्यापक दर्शन है, सृष्टि को देखने का बोध अलग है। संगठन ने समाज और व्यक्ति में कभी भिन्नता नहीं की। हमारी दार्शनिक विचारधारा है कि जो पिण्ड में है वही ब्रम्हांड में है।

भाजपा सिद्धांतों, मूल्यों और आदर्शों की पार्टी : योगी

समारोप सत्र में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि एक राजनीतिक दल जिसने देश के अंदर पिछले आठ वर्षों में देश की पूरी काया पलट कर रख दी है वह देश ही नहीं दुनिया को भी एक नई दिशा दे रहा है। जब दुनिया के सामने स्वयं के अस्तित्व का संकट खड़ा हो रहा है तो पूरी दुनिया भारत की ओर आशा भरी निगाहों से देख रही है। वह राजनीतिक दल अपने सांस्कृतिक मूल्यों, अपने ऐतिहासिक, पौराणिक मुद्दों को लेकर अग्रणीय बना हुआ है। ऐसा सिर्फ भारतीय जनता पार्टी की कर सकती है। यही वजह है कि पिछले तीन दिन से चित्रकूट में प्रशिक्षण शिविर की हर ओर चर्चा हो रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ही सामूहिक रूप से चिंतन, सामूहिक रूप से इक्ट्ठा होना, सामूहिक रूप से बैठना, सामूहिक रूप से चिंतन को आगे बढ़ा सकती है। तीन दिनों के चिंतन में आप ने महसूस किया होगा कि पिछले पांच वर्षों में उत्तर प्रदेश में हमने क्या कुछ किया है और इसे प्राप्त करने में कैसे सफलता प्राप्त हुई, यह सब भी आपने बहुत नजदीक से महसूस भी किया होगा। पांच वर्ष पहले इस चित्रकूट में आना बहुत चुनौतीपूर्ण था। हमने पांच वर्ष पहले पहला मुद्दा अपने एजेंडे पर बुंदेलखंड का लिया। पहली घोषणा बुंदेलखंड एक्सप्रेस वे की थी जो अब शुरू हो चुका है। इसके बाद हर–घर नल की घोषणा की। हमने यहां की समस्याओं को दूर किया है। वही जब सुशासन के लक्ष्य को प्राप्त करने में आमजन मानस किसी सरकार की कार्य पद्धति को देखकर कहने लग जाए कि सरकार ठीक काम कर रही है और उसके चेहरे के भाव यह अहसास कराने लग जाएं तो समझिए सरकार ठीक काम कर रही है और सही दिशा में काम कर रही है।

राजनीति मूल्यों की होती है, सिद्धांतों की होती है, सिद्धांत विहीन राजनीति को अटल जी मौत का फंदा मानते थे।

'सिद्धांत विहीन राजनीति को अटलजी मौत का फंदा मानते थे'

सीएम ने कहा कि हमने सुशासन के लक्ष्य को उस दिशा में प्राप्त करने में अच्छे कदम बढ़ाए हैं हमारे कदम सही दिशा में हैं। हम एक सकारात्मक भाव के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उत्तर प्रदेश सुशासन की ओर बढ़ रहा है यह एक दिन में नहीं हुआ, एक बार के प्रयास से नहीं हुआ इसे प्राप्त करने में हमारे पीछे हमारे केंद्रीय नेतृत्व और यशस्वी मार्गदर्शन है। प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, रक्षामंत्री, राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय नेताओं के मार्ग दर्शन से हमने इसे प्राप्त किया है। हमने अपने कार्यक्रमों में मूल्यों और आदर्शों को अपनाकर इसे स्थापित किया है। वहीं अटलजी की बातों को ध्यान में रखकर जिसे हमने मंत्र माना वह कि राजनीति मूल्यों की होती है, सिद्धांतों की होती है, सिद्धांत विहीन राजनीति को अटल जी मौत का फंदा मानते थे। हमने केवल सिद्धांतों की राजनीति को बखूबी अपनाया।

'आमजन मानस को हम पर विश्वास, इसे कायम रखना है'

मुख्यमंत्री ने कहा कि हम लोग किसी भी पद्धति के विरोधी नहीं हैं, हमारी पारंपरिक चिकित्सा आयुर्वेद थी और योग को दुनिया ने स्वीकार किया है। आज दुनिया योग के पीछे भाग रही है। हम प्रधानमंत्री के आभारी हैं जिन्होंने 21 जून की तिथि को

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में दुनिया में मान्यता दिलाई। योग वैश्विक मंच पर छा रहा है। कोरोना महामारी के दौरान पूरी दुनिया ने आयुर्वेद की ताकत को माना, लेकिन आयुर्वेद में जब इतनी ताकत है तो वह पिछड़ा क्यों यह सोचने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हम आवश्यकता पड़ने पर अपनी बातों को मूल्यों और सिद्धांतों के साथ रखने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करते हैं। वहीं जब आम जनमानस के मन में विश्वास होता है कि सरकार सब ठीक कर देगी और उसके मन में जब कोई अविश्वास नहीं है तो हमारा विरोधी कितना भी अविश्वास करता हो उसके अविश्वास से कुछ नहीं होता है। यही वजह है कि वर्ष 2022 के विधानसभा के चुनाव में जनता ने भारतीय जनता पार्टी पर अपना विश्वास दिखाया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्रदेव सिंह में प्रशिक्षण वर्गों का व्रत प्रस्तुत करते हुए बताया कि प्रदेश के 98 संगठनात्मक जिलों में प्रशिक्षण वर्ग संपन्न हो चुके हैं, जिसमें 13624 पार्टी पदाधिकारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया इसके साथ ही प्रदेश के 1918 मंडलों में आयोजित प्रशिक्षण वर्गों में 113024 कार्यकर्ता शिक्षित हुए। श्री सिंह ने कहा कि प्रदेश के शिक्षण वर्ग में 3 दिन तक पूर्ण अनुशासित रहकर प्रदेश के पदाधिकारियों प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्रियों पार्टी के मोर्चों के अध्यक्ष प्रकोष्ठ हुआ विभागों के प्रदेश संयोजक क्षेत्रीय अध्यक्ष व क्षेत्रीय महामंत्री सहित जिला प्रभारियों तथा वरिष्ठ नेताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

इससे पूर्व प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने उत्तर प्रदेश की वर्तमान परिस्थिति और चुनौती विषय पर सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि आज भाजपा बनाम पूरा विपक्ष है। हमें हर कसौटी पर खरा उतरना है। विभिन्न माध्यमों से लोगों तक पहुंचने का सतत क्रम जारी रखना है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक क्षेत्र व प्रत्येक वर्ग में हमें सभी को जोड़ना है।

श्री मौर्य ने कहा कि जहां क्षेत्रीय दलों सहित समस्त विपक्ष का एजेंडा परिवारवाद व जातिवाद है। वहीं भाजपा की नीति अंत्योदय की विचारधारा है। हमें प्रत्येक व्यक्ति को संगठन से जोड़कर विचारधारा से जोड़ने का काम करना है।

उन्होंने कहा कि विरोधियों का आत्मविश्वास डगमगाया हुआ है। हमें जनता की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए 2024 में अभूतपूर्व विजय की तैयारियों के साथ जुटना है।

प्रदेश महामंत्री संगठन श्री सुनील बंसल ने प्रशिक्षण वर्ग में हमारी कार्यपद्धति पर विषय रखते हुए कहा कि भाजपा कार्यकर्ता आधारित और निश्चित विचारधारा के आधार पर चलने वाला जन संगठन है।

भाजपा ने अपनी कार्य पद्धति को अपनी विचारधारा के अनुसार बनाया है। उन्होंने कहा भाजपा की कार्य पद्धति की विशेषता सामूहिकता, पारस्परिकता, संपर्क, निर्णय प्रक्रिया बैठके, प्रवास व अनुशासन है। हमारी कार्यपद्धती सर्वस्पर्शी, सर्वव्यापी व सर्वग्राही है।

हम जिस विचारधारा के लिए काम कर रहे हैं उस विचारधारा के प्रति निष्ठा व संगठन के प्रति अटूट विश्वास का भाव लेकर काम करते हुए प्रत्येक कार्य के लिए कार्यकर्ता और प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए कार्य इस सूत्र पर काम करना भाजपा की कार्य पद्धति है।

प्रदेश के प्रशिक्षण वर्ग के तीसरे दिन सुबह समस्त प्रशिक्षणार्थियों ने दीनदयाल शोध संस्थान में रामायण वीथिका में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के चरित्र को झांकियों व चित्रों के माध्यम से आत्मसात किया। इसके पश्चात वर्ग स्थल पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मन की बात कार्यक्रम को सभी ने सामूहिक रूप से सुना।

अपनी विचारधारा को सर्वग्राही सर्व स्पर्शी बनाना है: स्वतंत्रदेव

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री स्वतंत्र देव सिंह ने भाजयुमों के तीन दिवसीय प्रदेश प्रशिक्षण वर्ग के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रवादी राजनैतिक दल है जो भारत को सुदृढ़, समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृत संकल्पित है। भाजपा में प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए कार्य और प्रत्येक कार्य के लिए कार्यकर्ता की योजना निर्धारित है। उन्होंने युवा मोर्चा को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह सिर्फ भाजपा में ही संभव है कि यहां बैठे आप सभी युवाओं में से कल कोई पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष बनकर मेरे स्थान पर खड़ा हो सकता है। श्री स्वतंत्र देव सिंह ने आगरा में भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करते हुए संगठन की कार्यपद्धति विषय पर सम्बोधित करते हुए उक्त बातें कहीं।

श्री स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी में हम सभी विचारधारा के लिए कार्य करते हैं और उस विचारधारा के लिए कार्य करना तथा उस विचारधारा को सर्वग्राही, सर्वस्पर्शी व सर्वव्यापी बनाना हम सभी का कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि हमारा राष्ट्रवाद, हमारी सामाजिकता, हमारा सामूहिक धर्म हमारे व्यवहार से प्रकट होता है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण हमारे संगठन की पुरातन परम्परा है। प्रशिक्षण के माध्यम से जनआकांक्षाओं की पूर्ति तथा जनता की सेवा करने के लिए उन्मुख कार्यकर्ताओं का निर्माण किया जाता है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस समेत सभी विपक्षी दलों की राजनीति के मूल में परिवारवाद, जातिवाद व क्षेत्रवाद है। वहीं भारतीय जनता पार्टी सिद्धान्तों व आदर्शो पर आधारित राजनैतिक दल है जो जन–जन की समृद्धि से राष्ट्र को समृद्ध बनाने के संकल्प से सिद्धि की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे संगठन के लिए हमारी कार्यपद्धति अनिवार्य है। जिसके माध्यम से आज हम दुनिया के सबसे बड़े संगठन हैं। हम विचारधारा के लिए काम करते है। इस लिए हमारी कार्यशैली व कार्यपद्धति अन्य पार्टियों से अलग है, जो हमारे दल को विशिष्ठता प्रदान करती है। श्री सिंह ने कहा कि भाजपा की आत्मा कार्यकर्ता है। सहज उपलब्धता, सादगी, निर्भीकता, अनुशासित आचरण, विश्वसनीयता, संवेदनशीलता, समय का प्रबंधन तथा वाक्कुशलता जैसे गुणों के साथ भाजपा कार्यकर्ता का निर्माण होता है। उन्होंने कहा कि संगठन की कार्यपद्धिति में विशेषरूप से कार्यकर्ता, कार्यक्रम, अनुशासन, परस्परता, सम्पर्क, संवाद, प्रवास, कार्यालय, बैठकें तथा संवैधानिक व्यवस्थाओं का अनुपालन निहित है।

घर-घर तिरंगा फहरायें : अमित शाह

दिल्ली के इंदिरा गांधी स्टेडियम में आयोजित तिरंगा उत्सव के भव्य कार्यक्रम में केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने पिंगली वेंकैया के परिजनों को मंच पर सम्मानित किया। महान स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकैया की जन्म जयंती के अवसर पर तिरंगा उत्सव कैम्पेन की शुरुआत की गई है। इस अवसर पर गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि आजादी के आंदोलन में अपने प्राणों की आहूति देने वाले अनगिनत सेनानी गुमनामी के अंधेरे में गुम हो गए, आज न उनका नाम है न कोई पहचान।

श्री शाह ने कहा कि ऐसे ही आजादी के गुमनाम और अनसंग नायकों को जन जन तक पहुंचाने और 1857 की क्रांति से लेकर 1947 की आजादी तक की उनकी भूमिका को नई पीढ़ी तक लेकर जाने का प्रयास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर संस्कृति मंत्रालय हर घर तिरंगा।

केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री अमित शाह ने देशवासियों से अपील करते हुए पीएम मोदी के हर घर तिरंगे का आह्वान पर देश के नागरिक 13 से 15 अगस्त तक होने वाले इस ऐतिहासिक आयोजन का हिस्सा बनें। शाह ने कहा कि पिंगलि वेंकैया समेत आजादी के अमर बलिदानियों को सच्ची श्रद्धांजलि देने का इससे बेहतर तरीका कुछ और नहीं हो सकता।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के तहत देशवासियों से अपील की थी कि आने वाले 13 अगस्त से 15 अगस्त तक सभी लोग अपने घरों में तिरंगा फहराएं और हर घर तिरंगा कैम्पेन का हिस्सा बनें। वहीं केंद्रीय संस्कृति मंत्री जी किशन रेड्डी ने देश के तमाम राजनीतिक दलों से दलगत राजनीति से ऊपर उठते हुए हर घर तिरंगा के राष्ट्रीय उत्सव में अपनी उपाथिति दर्ज कराने की गुजारिश की।

पिंगली वैंकैया ने की डिजायन किया था राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा

पिंगली वेंकैया ने ही महात्मा गांधी के कहने पर भारत के तिरंगे को डिजाइन किया था, उनके 146वीं जयंती के मौके पर इस तिरंगा उत्सव का आयोजन किया गया। इस मौके पर तिरंगा एंथम का डिजिटल वर्जन भी लॉन्च किया गया जिसे संस्कृति मंत्रालय ने प्रोड्यूस किया है।

पिंगली अफ्रीका में गांधी के संपर्क में आए थे

2 अगस्त 1876 को आंध्र प्रदेश के मछलीपट्टनम में जन्मे पिंगली वेंकैया ने प्रारंभिक शिक्षा मद्रास से पूरी की और उसके बाद कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से उन्होंने अपना स्नातक किया, कुछ समय रेलवे में नौकरी भी की। अंग्रेजी, हिंदी, तेलुगु, संस्कृत और जापानी जैसे अनेक भाषाओं के ज्ञानी पिंगलि वेंकैया को भूविज्ञान और कृषि क्षेत्र से विशेष लगाव था। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के एंग्लो–बोअर युद्ध में भाग लिया था, वहीं पर वह गांधी जी के संपर्क में आये और उनकी विचारधारा से प्रभावित हुए।

916 में पिंगली को मिली थी यह जिम्मेदारी पिंगली वेंकैया की दिलचस्पी दुनिया के अलग–अलग देशों के झंडों के बारे में जानने और उसका अध्ययन करने में थी, उनके इसी गुण से प्रभावित होकर महात्मा गांधी ने उन्हें 1916 में भारत के राष्ट्रीय झंडे का प्रारूप तैयार करने को कहा था। पिंगलि वेंकैया ने 1916 से 1921 तक विभिन्न देशों के झंडों का अध्ययन करने के बाद भारत के राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे का प्रारूप बनाया, जिसे 1931 के कांग्रेस के कराची अधिवेशन में स्वीकार कर लिया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि हम सबको मिलकर हर घर तिरंगा फहराना है।

ज्ञान भवन, पटना में चल रही भारतीय जनता पार्टी की दो दिवसीय संयुक्त मोर्चा राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक का समापन आज केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के उद्बोधन के साथ हुआ। इससे पहले माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने संयुक्त मोर्चा पदाधिकारियों और कार्यसमिति सदस्यों का मार्गदर्शन किया और उनसे संगठन की मजबूती, आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में चल रही सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का प्रचार प्रसार तथा हर घर तिरंगा कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु समर्पित भाव से कार्य करने का आह्वान किया।

> राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा कि हम सबको मिलकर हर घर तिरंगा फहराना है।

बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय जनता पार्टी चुनाव के लिए सदैव तैयार रहती है। भाजपा की 2024 के चुनाव की तैयारी पूरी है। उन्होंने कहा कि 2024 में लोक सभा चुनाव और 2025 में बिहार विधानसभा चुनाव आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। 2024 में पहले से अधिक लोक सभा सीटें जीत करके प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी पुन केन्द्र में सरकार बनाएगी।

श्री सिंह ने कहा कि भाजपा 2024 का लोक सभा चुनाव भी जदयू के साथ गठबंधन में लड़ेगी। भाजपा और जदयू गठबंधन 2025 में विधानसभा चुनाव भी साथ में लड़ेगा। हम सब एक साथ हैं, परस्पर प्रेम है और हम लोग एक साथ गठबंधन में ही चुनाव लड़ेंगे।

प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए श्री अरुण सिंह ने कहा कि माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के संबोधन से कार्यकर्ताओं में अपार विश्वास पैदा हुआ है और इस बैठक से मोर्चा के कार्यसमिति सदस्य प्रेरणा लेकर गए। केंद्रीय गृह मंत्री जी ने कहा कि हम सबको 13, 14 और 15 अगस्त, तीन दिनों तक हर घर में तिरंगा फहराना है। इसे भाजपा कार्यकर्ता एक अभियान के रूप में लेंगे और अभियान को सफल बनाएंगे। 9 अगस्त से 12 अगस्त तक पूरे देश में देशभक्ति का वातावरण निर्मित करना है। आदरणीय गृह मंत्री जी ने देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहली बार अत्यंत गरीब परिवार से आने वाली आदिवासी महिला सम्माननीय श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी के आसीन होने को देश के लिए ऐतिहासिक करार दिया और इसके लिए यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का हार्दिक अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी सरकार गांव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, आदिवासी, महिला एवं पिछड़ों के कल्याण के लिए कटिबद्ध है। आज केंद्र में सबसे अधिक दलित, आदिवासी, ओबीसी और महिला मंत्री हैं।

14 अगस्त विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस

आजादी के अमृत महोत्सव वर्श में पूरा देश अपने वैभव शहीदों को याद कर रहा है ऐसे में भारत विभाजन ''भारत माँ के टुकड़े होना याद आना स्वाभाविक है। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ, लेकिन इससे पहले 14 अगस्त 1947 को विभाजित भारत से पाकिस्तान का जन्म हुआ और इसी दिन पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान के मुस्लिम बहुल इलाकों में भयानक दंगे हुए, जहां हिंदुओं का कत्लेआम हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से प्रतिवर्ष 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के तौर पर मनाने का निर्णय किया था।

आजादी अमृत महोत्सव पर बटवारे की पीड़ा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दर्द छलक उठा। उन्होंने भावनाओं को साझा करते हुए कहा कि बंटवारे के दर्द को कभी भुलाया नहीं जा सकता। नफरत और हिंसा की वजह से हमारे लाखों बहनों और भाइयों को विस्थापित होना पड़ा और लाखों लोगों को अपनी जान तक गंवानी पड़ी। उन लोगों के संघर्ष और बलिदान की याद में प्रतिवर्ष 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के तौर पर मनाने का निर्णय लिया गया है। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री मोदी ने आगे लिखा कि विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस का यह दिन हमें भेदभाव, वैमनस्य और दुर्भावना के जहर को खत्म करने के लिए न केवल प्रेरित करेगा, बल्कि इससे एकता, सामाजिक सद्भाव और मानवीय संवेदनाएं भी मजबूत होंगी।

अंग्रेजों द्वारा भारत–पाकिस्तान के बंटवारे के समय 14 अगस्त 1947 को ही बंगाल, बिहार और पंजाब में भयानक सांप्रदायिक दंगे हुए थे। जिनमें तकरीबन 2.5 लाख से 10 लाख लोग मारे गए थे। खास बात यह कि इन सांप्रदायिक दंगो को रोकने के लिए उस वक्त महात्मा गांधी बंगाल के नोआखली में अनशन पर बैठ गए थे और स्वतंत्रता दिवस समारोह में भी शामिल नहीं हुए थे। जिसके चलते वह समारोह भी फीका लगने लगा था।

जब हम अपने देश में 15 अगस्त को अपना स्वतंत्रता

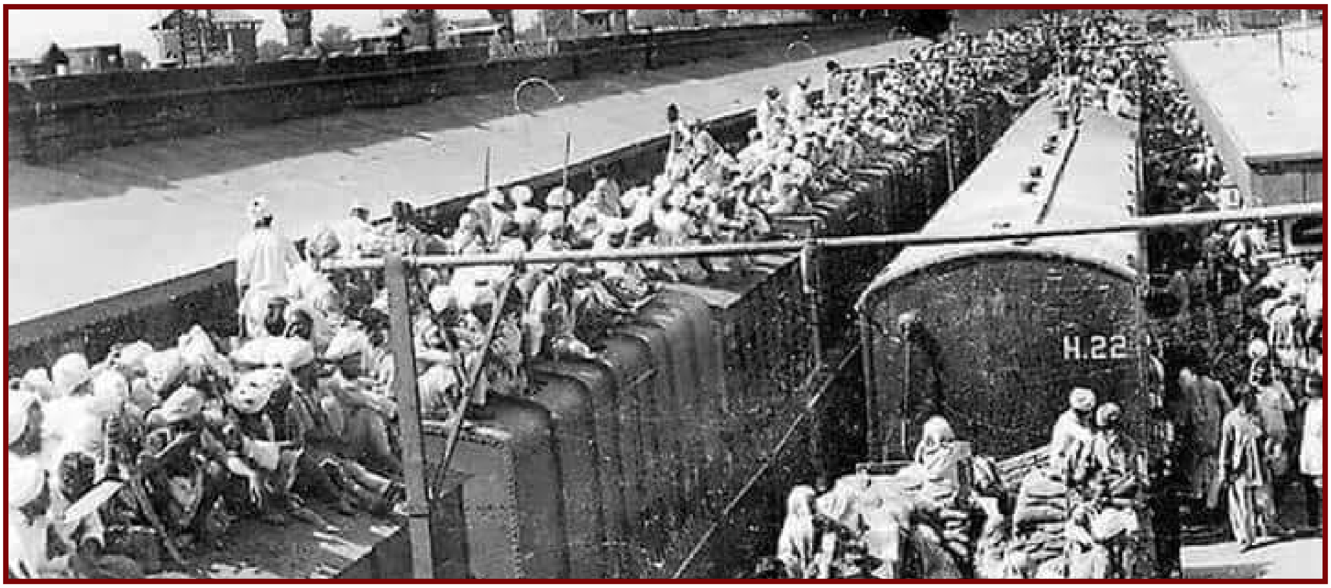

दिवस मनाते है, वहीं पाकिस्तान 14 अगस्त को अपनी आजादी का दिवस मनाता है। दरअसल, 14 अगस्त को ही गुलाम भारत के दो टुकड़े हुए थे और एक नए मुल्क पाकिस्तान का जन्म हुआ था। इसी के साथ भारत को भी अंग्रेजों द्वारा आजाद घोषित कर दिया गया था। पाकिस्तान को 1947 में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन द्वारा भारत के विभाजन के बाद एक मुस्लिम देश के रूप में तराशा गया था। जिसके चलते न केवल लाखों लोग विस्थापित हुए थे बल्कि बड़े पैमाने पर दंगे भड़कने के कारण कई लाख लोगों की जान चली गई थी।

15 अगस्त 1947 की सुबह भी ट्रेनों, घोड़े–खच्चर और पैदल ही लोग अपनी ही मातृभूमि से विस्थापित होकर एक–दूसरे के बन चुके अपने अपने देश जा रहे थे। मतलब कि पाकिस्तान से हिंदुस्तान और हिंदुस्तान से पाकिस्तान आने वालों के चेहरों से सारे रंग गायब थे। बताया जाता है कि इसी बीच बंटवारे के दौरान दोनों तरफ भड़के दंगे और हिंसा में लाखों लोगों की जान चली गई। यह आंकड़ा 20 लाख तक भी बताया गया है। यह तत्कालीन प्रशासन पर किसी कलंक से कम नहीं है, क्योंकि बिना सोचे–समझे आनन–फानन में सबकुछ किया गया, जिसकी कीमत आम लोगों ने अपने धन–जन को खोकर चुकाई।

जब पाकिस्तान 14 अगस्त को भारत से अलग हुआ था, तब स्वतंत्रता संग्राम के सियासी सेनानियों ने कहा था कि देश के नागरिक जो पाकिस्तान के साथ रहना चाहते हैं, वो रह सकते हैं और जो भारत के साथ रहना चाहते हैं वो भी रह सकते हैं। हालांकि, पाकिस्तान ने उस दौरान तो इस समझौते को स्वीकार कर लिया था। लेकिन इसके अगले ही दिन पाकिस्तान का क्रूर चेहरा सामने आया। वहां से आने वाली ट्रेनों पर जब हिंदुओं–सिखों की लाशें आने लगी, तो भारत वासी सन्न रह गए और भारतीय राजनेता अचंभित। लेकिन अब कुछ किया नहीं जा सकता था। इसलिए महात्मा गांधी नोआखाली पहुंच गए थे। आज भारत अमृत महोत्सव वर्श में अपने विभाजन के शहीदों को नमन कर रहा है।

स्वतंत्रता की अलख जगाने वाली वीरांगनाओं की गाथा

मीना चौबे

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान पर भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के मौके पर देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। पूरा देश आजादी के अमृतमहोत्सव को अपने अपने स्तर और तरीकों से मना रहा है। देश के हर राज्य, जिले, गांव कस्बे हर घर में तिरंगा झंडा फहराया जाएगा। आजादी के अमृत महोत्सव में भारत को आजादी दिलाने वाले अमर शहीदों को याद किया जा रहा है। देश को अंग्रेजों की गुलामी की जंजीरों से निकालने के लिए उस समय राजा महाराजाओं के दौर में कई स्वतंत्रता सेनानी हुए, मंगल पांडेय, 1857 की क्रांति, आजाद भारत का सपना समय के साथ और प्रबल होता गया। अंग्रेजों की नीति के खिलाफ भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने हंसते हंसते फांसी के फंदे को गले लगा दिया। इन सभी वीरों की गाथा आज भी लोगों के रगो में खून में उबाल ला देती हैं। ऐसे में भारत के स्वातंत्र युद्ध मे मातृशक्ति की भूमिका भी अतुलनीय है उस दौर में हर गांव शहर नगर से हजारों ऐसी नारियां भी हुईं जिन्होंने आजादी की लौ को जलाकर रखा। इन वीरांगनाओं और महिला स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी के लिए पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। अनेकों ऐसी महिला क्रांतिकारी व वीरांगना हुई जिन्होंने ऐशो आराम की जिंदगी को त्याग कर देश के नाम अपना जीवन लगा दिया। आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर ऐसी ही कुछ वीरांगनाओं व क्रांतिकारी मातृशक्तिओ के बारे में चर्चा करूंगी जो अपनी सहज जिंदगी छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम के मैदान में कूद पड़ीं। यह आजादी हमें यूं ही नहीं मिली। इसके लिए न जाने कितने फांसी के फंदे पर झूले और न जाने कितनों ने गोली खाई तब जाकर हमने यह आजादी पाई। देश ऋणी है उन क्रांतिवीरों व वीरांगनाओं का जिन्होंने देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। परंतु दुःख है इतिहास में कुछ खास लोगों को ही जगह मिली।कुछ लोग त्याग, बलिदान और आजादी के लिए किए गए लंबे संघर्षों के बाद स्वतंत्र भारत में भी वह सम्मान और पहचान न पा सके जिसके वे हकदार थे। इन वीर सेनानियों में अनेक महिलाएं भी थीं जिन्होंने न केवल क्रांतिकारियों की हर तरह तरह से सहायता की बल्कि संगठनों व सभाओं का नेतृत्व भी किया और युद्ध भूमि में लड़ी भी आज आपके समक्ष कुछ ऐसी ही वीरांगनाओं के बारे में चर्चा करूंगी जिनकी चर्चा इतिहास के पन्नों में कमतर सी गईं है ।

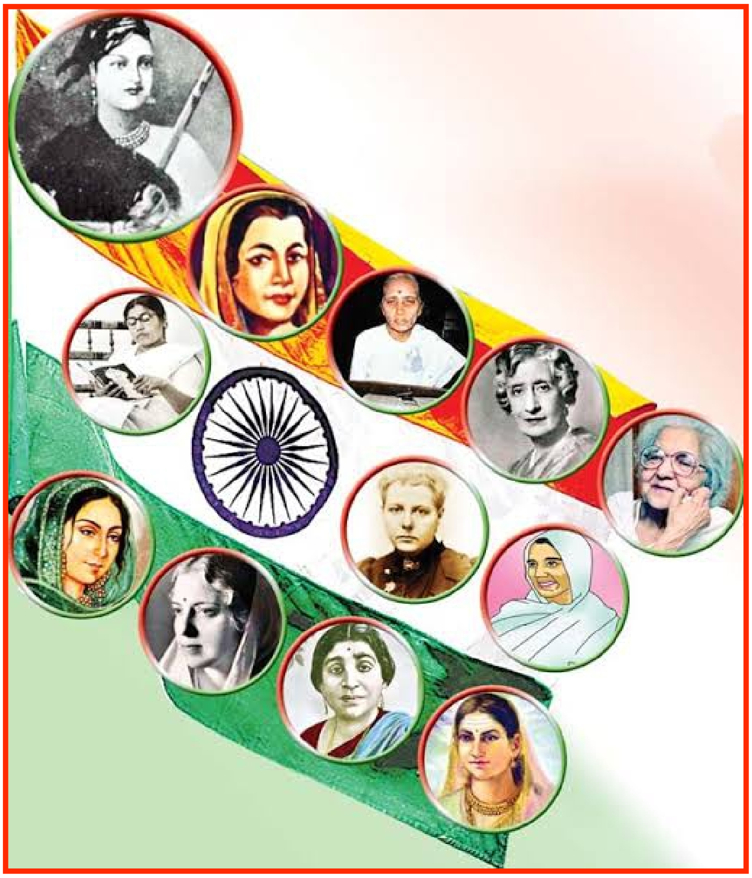

अभी हाल ही में मुझे बुंदेलखंड की धरती झांसी जाने का अवसर प्राप्त हुआ मानो वहां की धरती की हर कण कण से सुभद्रा कुमारी की पंक्तियां खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी के बोल फुट रहे थे– महारानी लक्ष्मीबाई हाँ ठीक समझे। मैं सबसे पहले झांसी की रानी महारानी लक्ष्मी बाई के नाम को स्मरण करती हूं, देश की पहली महिला क्रांतिकारी रानी लक्ष्मी बाई ने अपनी मातृभूमि अपनी धरती और एक माँ के रूप में अपनी बेटे की रक्षा के लिए अंग्रेजों से आखिरी सांस तक लड़ाई की। एक महिला पीठ पर बच्चे को बांधे हाथ में अपनी धारदार तलवार लिए सैकड़ों अंग्रेज सैनिकों के सामने डटकर युद्ध भूमि में लड़ती रहीं यह कल्पना ही भारत की प्रत्येक नारी के रगों में विद्धुत सी तरंगे हिलोरे लेने लगती है मातृशक्ति की अद्‌भुद मिसाल महारानी लक्ष्मीबाई ब्रिटिश राज और अंग्रेजों के छक्के छुड़ाते हुए अंततः शहीद हो जाती है पर मैं अपनी झांसी नही दूँगी के अमर बोल दे जाती है उनका जीवन हर नारी के लिए एक मिसाल है।आज उनका नाम वीरांगना व सशक्त महिला का पर्याय बन चुका है, जो किसी भी सशक्त महिला के लिए उपयोग किया जाता है।ऐसी ही बुंदेलखंड की एक वीरांगना झलकारी बाई है झलकारी बाई का जन्म 22 नंवबर 1830 को झांसी के भोजला गांव में होता है। बचपन में ही उनकी मां की मृत्यु हो जाती है। पिता ने मां और पिता दोनों की भूमिका निभाते हुए उन्हें बड़े प्यार से पालते है

और घुड़सवारी व तीरंदाजी की शिक्षा देते है। उनका विवाह रानी लक्ष्मीबाई की सेना के एक सैनिक के साथ होता है । विवाहोपरांत वे रानी के संपर्क में आती है। रानी ने उनकी क्षमताओं से प्रभावित होकर उन्हें अपने महिला सैनिकों की शाखा दुर्गा दल में शामिल कर लेती है वहां उन्होंने तोप व बंदूक चलाना सीखती है और दुर्गा दल की सेनापति बन जाती है। कहा जाता है कि वे लक्ष्मीबाई की हमशक्ल भी थीं। शत्रु को धोखा देने के लिए कई बार वे रानी के वेश में भी युद्धाभ्यास करती थीं। अपने अंतिम समय में वे रानी के वेश में युद्ध करते हुए अंग्रेजों के हाथों पकड़ी जाती है और रानी को किले से भागने का अवसर प्रदान करती है ऐसी वीरांगना झलकारी बाई को नमन है ऐसी ही एक वीरांगना रानी चेनम्मा की कथा मिलती है चेनम्मा कर्नाटक के कित्तूर राज्य की रानी होती है।जिनका जन्म 1778 में बेलगाम जिले के ककती गांव में होता है। पहले पति फिर पुत्र की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने अपनी 'राज्य हड़प नीति' के तहत कित्तूर राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने की घोषणा कर देते है। रानी को यह मंजूर नहीं होता और उन्होंने अंग्रेजी सेना से जमकर लोहा लेती है अपूर्व शौर्य प्रदर्शन के बाद भी वे अंग्रेजी सेना का मुकाबला में शिकस्त मिलने पर उन्हें कैद कर लिया जाता है और 21 फरवरी 1829 को कैद में ही उनकी मृत्यु हो जाती है। उनके इस बलिदान ने तमाम रजवाड़ों को संगठित होने के लिए प्रेरित किया।ऐसी ही एक वीरांगना का नाम दुर्गावती देवी का नाम आता है ।दुर्गावती देवी को इतिहास में दुर्गा भाभी के नाम से जाना जाता है। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की तरह भले ही दुर्गा भाभी देश के लिए फांसी पर न चढ़ी हों लेकिन उनके कंधे से कंधा मिलाकर आजादी की लड़ाई लड़ती रहीं। उनके हर आक्रमक योजना का हिस्सा बनी। दुर्गा भाभी ने बम बनाना सीखा। जब देश के सपूत अंग्रेजो से लोहा लेने के लिए घर से निकलते तो वह उन्हें टीका लगाकर विजय पथ पर भेजती। उन्हें गुलाम भारत की आयरन लेडी भी कहा जा सकता है। जिस पिस्तौल से चंद्र शेखर आजाद ने खुद को गोली मारकर बलिदान दिया था, वह पिस्तौल दुर्गा भाभी ने ही आजाद को दी थी। लाला लाजपत राय की मौत के बाद उनका गुस्सा इस कदर हावी था कि वह खुद स्कॉर्ट को जान से मारना चाहती थीं लेकिन उन्हें ये मौका नहीं मिला। हालांकि स्कॉर्ट की हत्या के बाद भगत सिंह की पत्नी बन कर अंग्रेजो से बचाने के लिए उनके प्लान का हिस्सा जरूर बनीं। ऐसी ही वीरांगना में असम की कनकलता बरुआ का नाम भी आता है इनका जन्म 22 दिसंबर 1924 को असम के सोनीपुर जिले के गोहपुर गांव में हुआ अल्पायु में ही माता–पिता की मृत्यु के बाद उनकी नानी ने उन्हें पाला–पोसा। 1931 में गमेरी गांव में रैयत अधिवेशन हुआ जिसमें तमाम क्रांतिकारियों ने भाग लिया। सात साल की कनकलता भी अपने मामा के साथ अधिवेशन में गईं। इस अधिवेशन में भाग लेने वाले सभी क्रांतिकारियों पर राष्ट्रदोह का मुकदमा चला तो पूरे असम में क्रांति की आग फैल गई। कनकलता क्रांतिकारियों के बीच धीर–धीरे बड़ी होने लगीं। एक गुप्त सभा में 20 सितम्बर 1942 को तेजपुर कचहरी पर तिरंगा फहराने का निर्णय हुआ। उस दिन बाइस साल की कनकलता तिरंगा हाथ में थामे जुलूस का नेतृत्व कर रही थीं। अंग्रेजी सेना की चेतावनी के बाद भी वे रुकी नहीं और छाती पर गोली खाकर शहीद हो गईं। अपनी वीरता व निडरता के कारण वे वीरबाला के नाम से जानी गईं। आज सबसे कम उम्र की बलिदानी कनकलता का नाम भी इतिहास के पन्नों से गायब है।

ऐसी ही अनेक मातृशक्तिओ ने भारत माता को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए स्वयं को न्योछावर कर दिया । ऐसे सभी आजादी के रणबाकुरों व वीरांगनाओं को नमन है वन्दन है ।

– लेखिका प्रदेश मंत्री भाजपा उत्तर प्रदेश।

देश 21वीं सदी को 'भारत की सदी' बनाने के लिए तैयार हो रहा है...

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का राष्ट्र के नाम आखिरी संबोधन

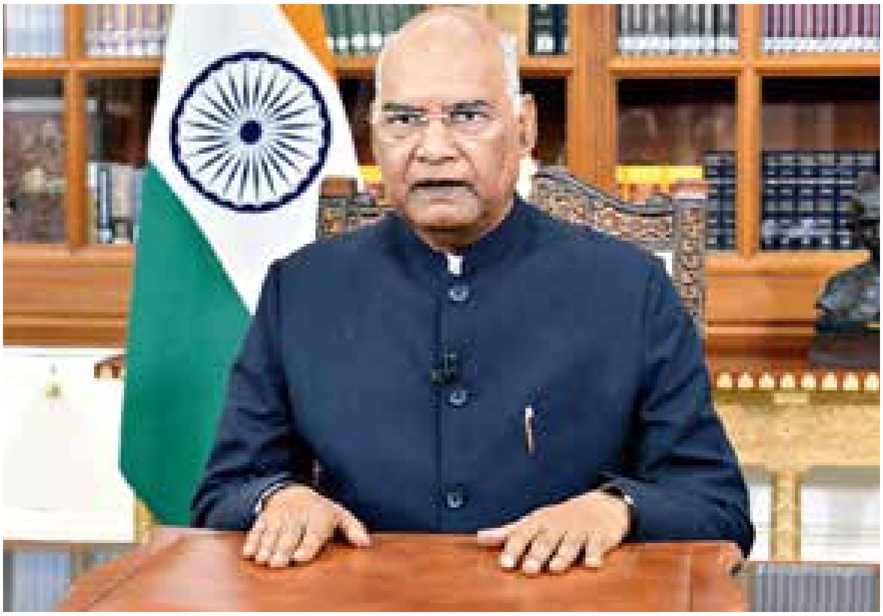

निवर्तमान राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने 24 जुलाई को राष्ट्र के नाम अपने आखिरी संबोधन में कहा कि देश 21वीं सदी को 'भारत की सदी' बनाने के लिए तैयार हो रहा है। उन्होंने स्वास्थ्य देखभाल और शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ये आर्थिक सुधारों के साथ, नागरिकों को उनकी क्षमता का एहसास कराकर उन्हें समृद्ध बनायेंगे।

श्री कोविंद ने कहा कि मेरा मानना है कि 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' युवा भारतीयों के लिए अपनी विरासत से जुड़ने और इक्कीसवीं सदी में अपने पैर जमाने में बहुत सहायक सिद्ध होगी।

राष्ट्र के नाम राष्ट्रपति के रूप में अपने अंतिम टेलीविजन संबोधन में श्री कोविंद ने कहा कि महामारी ने सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे में और सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया है। मुझे खुशी है कि सरकार ने इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।

उन्होंने कहा कि आजकल सभी देशवासी 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना रहे हैं। अगले महीने हम सब भारत की आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाएंगे। हम 25 वर्ष की अवधि के उस 'अमृत काल' में प्रवेश करेंगे, जो स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष अर्थात 2047 में पूरा होगा। ये विशेष ऐतिहासिक वर्ष हमारे गणतंत्र के प्रगति पथ पर मील के पत्थर की तरह हैं।

श्री कोविंद ने कहा कि हमारे लोकतन्त्र की यह विकास यात्रा देश की स्वर्णिम संभावनाओं को कार्यरूप देकर विश्व समुदाय के समक्ष एक श्रेष्ठ भारत को प्रस्तुत करने की यात्रा है।

उन्होंने कहा कि हम सबके लिए माता की तरह पूज्य प्रकृति गहरी पीड़ा से गुजर रही है। जलवायु परिवर्तन का संकट हमारी धरती के भविष्य के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। हमें अपने बच्चों की खातिर अपने पर्यावरण, अपनी जमीन, हवा और पानी का संरक्षण करना है।

श्री कोविंद ने कहा कि अपनी दिनचर्या में तथा रोज़मर्रा की चीजों का इस्तेमाल करते समय हमें अपने पेड़ों, नदियों, समुद्रों और पहाड़ों के साथ–साथ अन्य सभी जीव–जंतुओं की रक्षा के लिए बहुत सावधान रहने की जरूरत है। प्रथम नागरिक के रूप में यदि अपने देशवासियों को मुझे कोई एक सलाह देनी हो तो मैं यही सलाह दूंगा।

महामारी ने सार्वजनिक स्वास्थ्य ढांचे में और सुधार की आवश्यकता को रेखांकित किया है। मुझे खुशी है कि सरकार ने इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है

'आपने सिद्धांतों, ईमानदारी, कार्य, संवेदनशीलता और सेवा के उच्चतम मानक निर्धारित किए'

राष्ट्रपति के तौर पर श्री रामनाथ कोविंद के कार्यकाल पूर्ण होने से एक दिन पहले उन्हें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का एक पत्र मिला, जिसमें प्रधानमंत्री ने उनके कार्यकाल के दौरान सिद्धांतों, ईमानदारी, कार्य, संवेदनशीलता और सेवा के उच्चतम मानकों को स्थापित करने के लिए पूर्व राष्ट्रपति की सराहना की।

पूर्व राष्ट्रपति ने अपने संदेश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को उनके संवेदनशील शब्दों के लिए धन्यवाद दिया। श्री कोविंद ने ट्वीट किया, "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के इस पत्र ने मुझे गहराई से छुआ है। मैं उनके संवेदनाशील और हृदय को छूने वाले शब्दों को देशवासियों द्वारा मुझ पर बरसाए गए प्यार और सम्मान के प्रतिबिंब के रूप में ग्रहण करता हूं। मैं आप सभी का तहे दिल से आभारी हूं।"

श्री रामनाथ कोविंद को लिखे अपने पत्र में प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कहा, "जैसा कि आपका कार्यकाल समाप्त हो रहा है, इस अवसर पर पूरे देश के साथ मैं भी आपको नमन करता हूं और हमारे गणतंत्र के राष्ट्रपति एवं सार्वजनिक जीवन में एक लंबे और प्रतिष्ठित जीवन में उत्कृष्ट सेवा के लिए अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। आपने सिद्धांतों, ईमानदारी, कार्य, संवेदनशीलता और सेवा के उच्चतम मानकों को निर्धारित किया है।"

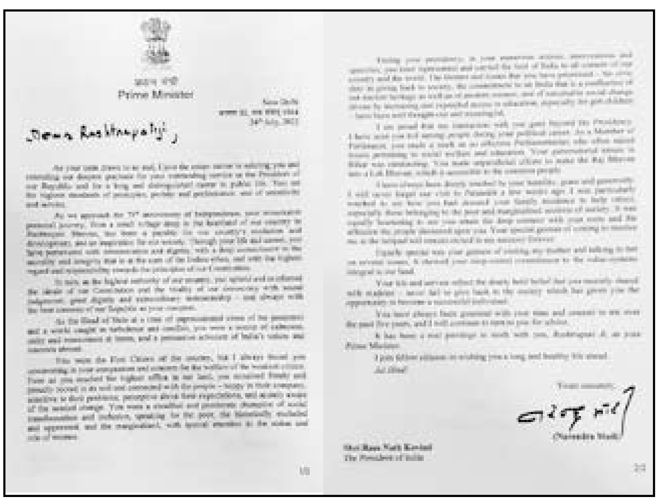

Prime Minister

Dear Rashtrapatiji,

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव से राष्ट्रपति भवन तक श्री कोविंद की यात्रा की भी सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि पूर्व राष्ट्रपति ने संविधान के आदर्शों और लोकतंत्र की जीवंतता को सुदृढ़ निर्णय, गरिमापूर्ण आचरण और असाधारण नेतृत्व के साथ बनाए रखा और उन्हें मजबूत किया।

उन्होंने कहा कि जब दुनिया महामारी के अभूतपूर्व तनाव और अशांति एवं संघर्ष में फंसी थी, तब आप राष्ट्र प्रमुख के रूप में शांति, एकता और आश्वासन के स्रोत थे और विदेशों में भारत के मूल्यों और हितों को मजबूती के साथ रख रहे थे।

उन्होंने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति महिलाओं की स्थिति और भूमिका पर विशेष ध्यान देने के साथ ही गरीबों, ऐतिहासिक रूप से बहिष्कृत और उत्पीड़ित एवं हाशिए पर रहनेवाले लोगों के लिए मुखर होकर बात करते थे। श्री कोविंद सामाजिक परिवर्तन और समावेशन के एक दृढ़ और भावुक चौंपियन थे। आपने एक प्रभावी सांसद के रूप में अपनी पहचान बनाई, जिन्होंने अक्सर सामाजिक कल्याण और शिक्षा से संबंधित मुद्दों को उठाया। बिहार में राज्यपाल के रूप में आपका कार्यकाल उत्कृष्ट रहा। आपने राजभवन को एक ऐसा लोकभवन बनाने का अतुलनीय प्रयास किया, जो आम लोगों की पहुंच में हो।

प्रधानमंत्री ने उनके साथ परौंख के दौरे को भी याद किया और कहा, "मैं हमेशा आपकी विनम्रता, अनुग्रह और उदारता से प्रभावित हुआ हूं। मैं कुछ सप्ताह पहले परौंख की अपनी यात्रा को कभी नहीं भूलूंगा। मैं यह देखकर विशेष रूप से प्रभावित हुआ था कि आपने कैसे दूसरों की मदद करने के लिए अपना पारिवारिक आवास को दान दिया, विषेष रूप से समाज के गरीब और हाशिए के वर्गों के लोगों की मदद के लिए। यह देखकर भी उतना ही खुशी हुई कि आपने अपनी जड़ों से गहरा संबंध बनाए रखा और लोगों ने आप पर जो स्नेह बरसाया, वह उतनी ही खुशी की बात है।

पत्र को समाप्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा, "पिछले पांच वर्षों में आपने हमें हमेशा अपना समय और सलाह दी और मैं सलाह लेने के लिए हमेशा आपकी ओर देखता रहा। राष्ट्रपति जी, आपके प्रधानमंत्री के रूप में काम करना वास्तव में एक सुखद अनुभव रहा। मैं देशवासियों के साथ आपके लंबे और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। जय हिंद!

जनजाति सशक्तीकरण के संकल्प की मिसाल

अमित शाह

द्रौपदी मुर्मूजी का राष्ट्रपति निर्वाचित होना भारतीय लोकतंत्र के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। अत्यंत गरीब पृष्ठभूमि की जनजातियों में भी सबसे पिछड़े संथाली परिवार से निकलकर संघर्षों एवं कर्मठता के बलबूते उनका सर्वोच्च पद तक पहुंचना देशवासियों के साथ–साथ जनजातीय समाज के लिए भी गौरव का क्षण है। ऐसे समाज को शीर्ष पर प्रतिनिधित्व देने में देश को सात दशकों की लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी। आज हमारा लोकतंत्र इस प्रश्नचिह्न से मुक्त हो गया है। देश की कुल जनसंख्या में आदिवासी समाज की संख्या नौ प्रतिशत है। स्वतंत्रता आंदोलन में भी आदिवासी समाज का योगदान–बलिदान अविस्मरणीय है, किंतु स्वतंत्र भारत में सरकारों ने लंबे समय तक उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ने एवं उनके सामाजिक–आर्थिक उत्थान और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किए।

अटलजी के नेतृत्व में जब पहली बार भाजपानीत राजग की सरकार बनी तो इस समाज की आशाओं–आकांक्षाओं को समझने का गंभीर प्रयास हुआ। अटलजी द्वारा जनजातीय समाज के उत्थान एवं समृद्धि के लिए 1999 में एक अलग मंत्रालय बनाने के साथ ही 89वें संविधान संशोधन के जरिये राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की स्थापना कर इनके हितों को सुनिश्चित करने की पहल की। अटलजी ने जनजातीय समाज के उत्थान एवं सम्मान की जो शुरुआत की, पिछले आठ वर्षों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी ने उसे और सशक्त ढंग से आगे बढ़ाया है।

‘सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास’ के संकल्प को लेकर आगे बढ़ रही मोदी सरकार ने अपने निर्णयों एवं नीतियों में जनजातीय समुदाय के सभी वर्गों की आशाओं एवं आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए तमाम दूरदर्शी कदम उठाए हैं। मोदीजी के आठ वर्ष के कार्यकाल में जनजाति विकास की लगभग सभी योजनाओं में पहले की तुलना में भारी वृद्धि हुई है। केंद्र सरकार द्वारा संचालित जनजातीय उप–योजना बजट को वित्त वर्ष 2021–22 में 21 हजार करोड़ रुपये से चार गुना बढ़ाकर 86 हजार करोड़ रुपये किया गया है। इसके अंतर्गत जनजातीय वर्गों के लिए जल जीवन मिशन के जरिये 1.28 करोड़ घरों में नल से जल पहुंचाने, 1.45 करोड़ शौचालय बनवाने, 82 लाख आयुष्मान कार्ड बनवाने एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 38 लाख घर बनवाने जैसे अनेक कार्य किए गए हैं।

जनजातीय समाज के सामाजिक-आर्थिक उत्थान के साथ उनकी सांस्कृतिक विरासत को सम्मानपूर्वक देश के समक्ष लाने का कार्य भी मोदी सरकार कर रही है। जनजातीय कला, साहित्य, परंपरागत ज्ञान एवं कौशल जैसे जनजातीय विषयों को अध्ययन-अध्यापन में सम्मिलित किया गया है। आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में जनजातीय नायकों-नायिकाओं की वीरगाथाओं को सामने लाने के उद्देश्य से देश भर में कई कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है

एकलव्य मॉडल विद्यालयों का बजट 278 करोड़ से बढ़ाकर 1,418 करोड़ और जनजातीय छात्रों के लिए निर्धारित छात्रवृत्तियों का बजट 978 करोड़ से बढ़ाकर 2,546 करोड़ रुपये किया गया है। इसके अतिरिक्त उद्यमिता विकास के उद्देश्य से नई योजना में 327 करोड़ रुपये के बजट से 3,110 वन–धन विकास केंद्रों एवं 53 हजार वन–धन स्वयं सहायता समूहों की स्थापना की गई है।

जनजातियों का वास मुख्य रूप से खनन प्रभावित क्षेत्रों में है, किंतु उन्हें कभी खनन से होनेवाली आय में हिस्सेदारी नहीं मिलती थी। मोदीजी ने डिस्ट्रिक्ट मिनरल फंड की स्थापना से इस विसंगति को दूर करते हुए सुनिश्चित किया कि खनन से हुई आय का 30 प्रतिशत स्थानीय विकास में खर्च हो। इसके जरिये अभी तक 57 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि एकत्रित हुई है, जिसका उपयोग जनजातीय क्षेत्रों के विकास में हो रहा है। इसके अतिरिक्त जनजातीय उत्पादों के विपणन के लिए बने ट्राईफेड संचालित ट्राइब्स इंडिया आउटलेट्स की संख्या 29 से बढ़कर 116 की गई है।

जनजातीय समाज के सामाजिक–आर्थिक उत्थान के साथ उनकी सांस्कृतिक विरासत को सम्मानपूर्वक देश के समक्ष लाने का कार्य भी मोदी सरकार कर रही है। जनजातीय कला, साहित्य, परंपरागत ज्ञान एवं कौशल जैसे जनजातीय विषयों को अध्ययन–अध्यापन में सम्मिलित किया गया है। आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में जनजातीय नायकों–नायिकाओं की वीरगाथाओं को सामने लाने के उद्देश्य से देश भर में कई कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

भगवान बिरसा मुंडा की जन्मतिथि 15 नवंबर को अब जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाया जाता है। देश भर में 200 करोड़ रुपए के बजट से जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालयों की स्थापना की जा रही है। मोदीजी अक्सर अपने भाषणों में भी जनजातीय नायकों–नायिकाओं के योगदान की चर्चा करते हुए उनके प्रति आदर व्यक्त करते रहते हैं। यह सब बातें दर्शाती हैं कि मोदी सरकार जनजातीय समाज के विकास और सम्मान के लिए मन, वचन और कर्म के साथ हर प्रकार से जुटी हुई है।

भाजपा हमेशा जनजातीय समाज की प्रगति के लिए कृतसंकल्पित रही है और आज मोदी जी के नेतृत्व में जब राष्ट्रपति चुनने का अवसर आया, तो देश को द्रौपदी मुर्मूजी के रूप में पहला जनजातीय राष्ट्रपति भी मिला है। सबसे निचले पायदान पर मौजूद समाज से आने वाली द्रौपदी मुर्मूजी आज जब देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहुंची हैं तो यह पूरे देश के लिए अत्यंत गौरव की बात है। यह निश्चित रूप से प्रधानमंत्री मोदीजी के जनजाति सशक्तीकरण के संकल्प की एक नायाब मिसाल है

भारत में कश्मीर से लेकर पूर्वोत्तर तक विशेषकर झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, राजस्थान और गुजरात में जनजाति वर्ग की बड़ी आबादी वास करती है। आजादी के बाद लंबे समय तक कांग्रेस ने उन्हें सिर्फ वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल किया। बड़ी जनजातीय आबादी वाले पूर्वोत्तर क्षेत्र की भी कांग्रेस ने निरंतर उपेक्षा की, लेकिन मोदी जी ने शासन में आते ही एक्ट ईस्ट नीति के तहत पूर्वोत्तर के विकास पर बल दिया। पिछले आठ वर्षों में पूर्वोत्तर राज्यों को मुख्यधारा से जोड़ते हुए उन्हें राष्ट्रीय प्रगति का साझेदार बनाया गया है। इस विकास से शांति भी स्थापित हुई है।

गरीबी के साथ–साथ असुरक्षा जनजातीय समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती रही है, जिसका लाभ वामपंथी उग्रवादी तत्वों ने अपनी जड़ें जमाने में किया। इन तत्वों ने न सिर्फ हमारे आदिवासी युवाओं को पथभ्रष्ट किया, बल्कि इन क्षेत्रों के विकास की राह में बाधा भी डाली। मोदी सरकार में यह स्थिति बदली है। उग्रवाद और नक्सलवाद पर जीरो टालरेंस की नीति से इनके दायरे सीमित हुए हैं। नक्सलवाद का प्रभाव अब न के बराबर ही रह गया है। इससे प्रभावित रहे क्षेत्रों में सुरक्षा की भावना बढ़ी है। इससे स्थानीय लोग विकास की मुख्यधारा में सहजता से शामिल हो रहे हैं।

जनजातीय समाज का उत्थान, गरिमापूर्ण जीवन, सामाजिक एवं आर्थिक विकास और उनकी राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करना भाजपा की विचारधारा का अभिन्न अंग रहा है। भाजपा हमेशा जनजातीय समाज की प्रगति के लिए कृतसंकल्पित रही है और आज मोदी जी के नेतृत्व में जब राष्ट्रपति चुनने का अवसर आया, तो देश को द्रौपदी मुर्मूजी के रूप में पहला जनजातीय राष्ट्रपति भी मिला है। सबसे निचले पायदान पर मौजूद समाज से आने वाली द्रौपदी मुर्मूजी आज जब देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर पहुंची हैं तो यह पूरे देश के लिए अत्यंत गौरव की बात है। यह निश्चित रूप से प्रधानमंत्री मोदीजी के जनजाति सशक्तीकरण के संकल्प की एक नायाब मिसाल है।

(लेखक केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री हैं)

मॉनसून सत्र में पेश होंगे 32 विधेयक

संसद का मानसून सत्र शुरू होने से एक दिन पहले केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री श्री प्रल्हाद जोशी ने 17 जुलाई को बताया कि संसद का मानसून सत्र 18 जुलाई से शुरू होगा और 12 अगस्त को समाप्त हो सकता है, जो सरकारी कामकाज की अत्यावश्यकताओं के अधीन होगा। सत्र के दौरान 26 दिनों की अवधि में कुल 18 बैठकें आयोजित की जाएंगी। उन्होंने यह भी बताया कि इस सत्र के लिए 32 विधायी कार्यों की पहचान की गई है, जिनमें से 14 को पहले ही अंतिम रूप दे दिया गया है।

मानसून सत्र, 2022 के दौरान पेश किये जाने वाले संभावित विधेयक निम्न हैं:

- भारतीय अंटार्कटिक विधेयक, 2021
- वन्य जीवन (संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2021
- समुद्री डकैती रोधी विधेयक, 2019
- माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण (संशोधन) विधेयक, 2019
- राष्ट्रीय डोपिंग रोधी विधेयक, 2021
- सामूहिक विनाश के हथियार और उनकी वितरण प्रणाली (गैरकानूनी गतिविधियों का निषेध) संशोधन विधेयक, 2022, जैसा लोकसभा द्वारा पारित किया गया है
- अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद (संशोधन) विधेयक, 2019, जैसा लोकसभा द्वारा पारित किया गया है
- संविधान (अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति) आदेश (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2022, जैसा लोकसभा द्वारा पारित किया गया है
- कॉफी (संवर्धन और विकास) विधेयक, 2022
- उद्यम और सेवा हब (डीईएसएच) का विकास विधेयक, 2022
- बहु राज्य सहकारी समितियां (संशोधन) विधेयक, 2022
- वस्तु के भौगोलिक संकेत (पंजीकरण और संरक्षण) (संशोधन) विधेयक, 2022
- भंडारण (विकास और विनियमन) (संशोधन) विधेयक, 2022
- प्रतिस्पर्धा (संशोधन) विधेयक, 2022
- दिवाला और दिवालियापन संहिता (संशोधन) विधेयक, 2022
- प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल और अवशेष (संशोधन) विधेयक, 2022
- कलाक्षेत्र फाउंडेशन (संशोधन) विधेयक, 2022
- छावनी विधेयक, 2022
- पुराना अनुदान (विनियमन) विधेयक, 2022
- वन (संरक्षण) संशोधन विधेयक, 2022
- राष्ट्रीय दंत आयोग विधेयक, 2022
- राष्ट्रीय नर्सिंग और प्रसूति सहायक विधेयक, 2022
- भारतीय प्रबंधन संस्थान (संशोधन) विधेयक, 2022
- केंद्रीय विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक, 2022
- केंद्रीय विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक, 2022
- प्रेस और पत्रिकाओं का पंजीकरण विधेयक, 2022
- खान और खनिज (विकास और विनियमन) संशोधन विधेयक, 2022
- ऊर्जा संरक्षण (संशोधन) विधेयक, 2022
- संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (संशोधन) विधेयक, 2022
- संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश (संशोधन) विधेयक, 2022
- मानव तस्करी (संरक्षण, देखभाल और पुनर्वास) विधेयक, 2022
- पारिवारिक न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 2022

भारत ने लगाए 200 करोड़ से अधिक कोविड-19 रोधी टीके

16 जनवरी, 2021 को टीकाकरण अभियान आरंभ होने के बाद से 100 करोड़ के अंक तक पहुंचने में लगभग 9 महीने लग गए और 200 करोड़ टीकाकरण तक पहुंचने में 9 महीने और लगे, जिसमें सबसे अधिक एक दिन का टीकाकरण रिकॉर्ड 17 सितम्बर, 2021 को हासिल किया गया, जब एक ही दिन में 2.5 करोड़ टीके लगाए गए

एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में भारत के कुल कोविड-19 टीकाकरण अभियान ने 17 जुलाई को 200 करोड़ के मील के पत्थर को पार कर लिया। 17 जुलाई की दोपहर 1 बजे तक की अनंतिम रिपोर्टों के अनुसार देश भर में टीकों की कुल 2,00,00,15,631 खुराकें दी जा चुकी थीं। यह 2,63,26,111 सत्रों के माध्यम से अर्जित किया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विज्ञान में उल्लेखनीय विश्वास दिखाने और कोविड-19 वैक्सीन की 200 करोड़ खुराक का विशेष आंकड़ा पार करने पर देशवासियों की सराहना की। श्री मोदी ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री मनसुख मांडविया की घोषणा के जवाब में ट्वीट किया कि भारत ने फिर रचा इतिहास! वैक्सीन की 200 करोड़ खुराक का विशेष आंकड़ा पार करने पर सभी भारतीयों को बधाई। उन लोगों पर गर्व है, जिन्होंने भारत के टीकाकरण अभियान को पैमाने और गति में अद्वितीय बनाने में योगदान दिया है। इसने कोविड-19 के खिलाफ वैश्विक लड़ाई को मजबूत किया है।

उन्होंने कहा कि वैक्सीन की शुरुआत से ही भारत के लोगों ने विज्ञान में उल्लेखनीय विश्वास दिखाया है। हमारे डॉक्टरों, नर्सों, अग्रिम पंक्ति के कर्मियों, वैज्ञानिकों, नवोन्मेषियों और उद्यमियों ने पृथ्वी को सुरक्षित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं उनकी भावना और दृढ़ संकल्प की सराहना करता हूं।

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने भी केवल 18 महीनों में यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करने पर देश को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह असाधारण उपलब्धि इतिहास में दर्ज की जाएगी।

उल्लेखनीय है कि भारत का राष्ट्रव्यापी कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 16 जनवरी, 2021 को आरंभ किया गया था। उनके सक्रिय और दूरदर्शी नेतृत्व में भारत ने 'मेक-इन-इंडिया' और 'मेक-फॉर वर्ल्ड' रणनीति के तहत कोविड-19 टीकों के अनुसंधान, विकास और निर्माण में सहायता की, भौगोलिक कवरेज का मूल्यांकन करने के लिए को-विन जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया, टीकों के लिए एईएफआई को ट्रैक किया, समावेशिता को बढ़ावा दिया और नागरिकों को उनके टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करने के लिए एकल संदर्भ बिंदु प्रदान किया तथा वैज्ञानिक साक्ष्य और वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं पर आधारित टीका लगाए जाने को प्राथमिकता दी।

इस राष्ट्रव्यापी प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए क्षमता निर्माण सुनिश्चित करने में कई प्रणालीगत युक्तियों का भी उपयोग किया गया। कोविड-19 टीकों के भंडारण और परिवहन के लिए विद्यमान आपूर्ति श्रृंखला का लाभ उठाया गया, उसे सुदृढ़ किया गया तथा टीका वितरण की प्रभावी निगरानी की गई एवं हर समय टीकों और सीरिंज की उपलब्धता और कुशल उपयोग सुनिश्चित किया गया।

भारत का स्वतंत्र और स्वैच्छिक राष्ट्रव्यापी कोविड-19 टीकाकरण प्रक्रिया हर घर दस्तक, कार्यस्थल सीवीसी, स्कूल आधारित टीकाकरण, बिना पहचान दस्तावेजों वाले व्यक्तियों के टीकाकरण, घर के पास सीवीसी और मोबाइल टीकाकरण टीमों जैसी पहलों के माध्यम से नागरिक अनुकूल दृष्टिकोण के साथ संचालित की जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित 71 प्रतिशत सीवीसी और महिलाओं को दी जाने वाली वैक्सीन की 51 प्रतिशत से अधिक खुराक के साथ भारत के राष्ट्रीय कोविड-19 टीकाकरण कार्यक्रम ने भौगोलिक और जेंडर समानता भी सुनिश्चित की।

देश भर में कोविड मामलों में कमी के बावजूद सभी पात्र नागरिकों को टीका लगाए जाने के प्रयास लगातार जारी थे। इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि 16 जनवरी, 2021 को टीकाकरण अभियान आरंभ होने के बाद से 100 करोड़ के अंक तक पहुंचने में लगभग 9 महीने लग गए और 200 करोड़ टीकाकरण तक पहुंचने में 9 महीने और लगे, जिसमें सबसे अधिक एक दिन का टीकाकरण रिकॉर्ड 17 सितम्बर, 2021 को हासिल किया गया, जब एक ही दिन में 2.5 करोड़ टीके लगाए गए।

75 दिवसीय 'कोविड टीकाकरण अमृत महोत्सव'

केन्द्र सरकार ने 15 जुलाई, 2022 को सरकारी कोविड टीकाकरण केन्द्रों (सीवीसी) में सभी पात्र वयस्क आबादी को निःशुल्क एहतियाती खुराक प्रदान करने के लिए 75 दिवसीय 'कोविड टीकाकरण अमृत महोत्सव' आरंभ किया। आजादी का अमृत महोत्सव समारोह के हिस्से के रूप में यह विशेष अभियान, कोविड टीकों की एहतियाती खुराक बढ़ाने के लिए एक 'मिशन मोड' में लागू किया जा रहा है।

दार्शनिक व प्रखर राष्ट्रवादी श्री अरबिंदो

(15 अगस्त, 1872 — 5 दिसम्बर, 1950)

शत-शत नमन

धुनिक काल में भारत में अनेक महान क्रांतिकारी और योगी हुए हैं, उनमें श्री अरबिंदो अद्वितीय हैं। श्री अरबिंदो घोष दार्शनिक, कवि और प्रखर राष्ट्रवादी थे, जिन्होंने आध्यात्मिक विकास के माध्यम से सार्वभौमिक मोक्ष का दर्शन प्रतिपादित किया। श्री अरबिंदो को भारतीय एवं यूरोपीय दर्शन और संस्कृति का अच्छा ज्ञान था। श्री अरबिंदो का मानना है कि इस युग में भारत विश्व में एक रचनात्मक भूमिका निभा रहा है तथा भविष्य में भी निभायेगा। उनके दर्शन में जीवन के सभी पहलुओं का समावेश है। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। संस्कृति, राष्ट्रवाद, राजनीति, समाजवाद, साहित्य और विशेषकर काव्य के क्षेत्र में उनकी कृतियां बहुचर्चित हुई हैं।

श्री अरबिंदो का जन्म 15 अगस्त, 1872 को बंगाल के कलकत्ता, वर्तमान कोलकाता में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम डॉक्टर कृष्ण धन घोष और माता का नाम श्रीमती स्वर्णलता देवी था। श्री अरबिंदो की शिक्षा दार्जिलिंग में ईसाई कॉन्वेंट स्कूल में प्रारम्भ हुई और वे आगे की शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गए। इंग्लैण्ड में श्री अरबिंदो घोष की भेंट बड़ौदा नरेश से हुई। बड़ौदा नरेश श्री अरबिंदो की योग्यता देखकर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने श्री अरबिंदो को अपना प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त कर लिया। वह बड़ौदा कॉलेज में प्रोफेसर बने और फिर बाद में वाइस प्रिंसिपल भी बने। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया, जहां पर वे तीन आधुनिक यूरोपीय भाषाओं के कुशल ज्ञाता बन गए। 1892 में भारत लौटने पर उन्होंने बड़ौदा, वर्तमान वडोदरा और कोलकाता में विभिन्न प्रशासनिक व प्राध्यापकीय पदों पर कार्य किया।

श्री अरबिंदो के लिए 1902 से 1910 के वर्ष हलचल भरे थे, क्योंकि उन्होंने भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने का बीड़ा उठाया था। बड़ौदा कॉलेज की नौकरी छोड़कर वह कोलकाता चले गए और कोलकाता के 'नेशनल कॉलेज' के प्रिंसिपल बने। इस समय तक उन्होंने 'सादा जीवन और उच्च विचार' जीवन अपना लिया। उन पर रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के साहित्य का गहन प्रभाव था।

सन् 1905 में लॉर्ड कर्जन ने पूर्वी बंगाल और पश्चिमी बंगाल के रूप में बंगाल के दो टुकड़े कर दिए, ताकि हिन्दू और मुसलमानों में फूट पड़ सके। इस बंग-भंग के कारण बंगाल में जन-जन में असंतोष फैल गया। रवीन्द्रनाथ ठाकुर और श्री अरबिंदो घोष ने इस जन आंदोलन का नेतृत्व किया। वे 1906 से 1909 तक सिर्फ तीन वर्ष के लिए प्रत्यक्ष राजनीति में रहे। इतने अल्प समय में भी वे लोगों के अति प्रिय बन गए।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस लिखते है— जब मैं 1913 में कलकत्ता आया, अरबिंदो तब तक किंवदंती बन चुके थे। जिस आनंद तथा उत्साह के साथ लोग उनकी चर्चा करते शायद ही किसी की वैसी करते। दो वर्ष बाद ब्रिटिश भारत को छोड़कर श्री अरबिंदो दक्षिण भारत स्थित फ्रांसीसी उपनिवेश पांडिचेरी चले गए, जहां उन्होंने अपना शेष जीवन पूर्णरूपेण अपना दर्शन विकसित करने में लगा दिया। उन्होंने वहां पर आध्यात्मिक विकास के अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में एक आश्रम की स्थापना की, जिसकी ओर विश्व भर के छात्र आकर्षित हुए।

पांडिचेरी आने के बाद वे सांसारिक कार्यों से अलग होकर आत्मा की खोज में लग गए। पांडिचेरी आने के बाद श्री अरबिंदो अंत तक योगाभ्यास करते रहे और उन्हें परमात्मा से साक्षात्कार की अनुभूति हुई। उनका दृढ़ विश्वास था कि संसार के दुःख का निवारण आत्मा के विकास से हो सकता है, जिसकी प्राप्ति केवल योग द्वारा ही संभव है। वे मानते थे कि योग से ही नई चेतना आ सकती है। श्री अरबिंदो घोष की मृत्यु 5 दिसम्बर, 1950 में पांडिचेरी में हुई थी।

भारतीय संस्कृति में सनातन पर्व रक्षा बन्धन

धर्मेन्द्र त्रिपाठी

रक्षाबन्धन भारतीय धर्म संस्कृति के अनुसार रक्षाबन्धन का त्योहार श्रावण माह की पूर्णिमा को मनाया जाता है। यह त्योहार भाई–बहन को स्नेह की डोर में बांधता है। इस दिन बहन अपने भाई के मस्तक पर टीका लगाकर रक्षा का बन्धन बांधती है, जिसे राखी कहते हैं। यह एक हिन्दू व जैन त्योहार है जो प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। श्रावण (सावन) में मनाये जाने के कारण इसे श्रावणी (सावनी) या सलूनो भी कहते हैं। रक्षाबन्धन में राखी या रक्षासूत्र का सबसे अधिक महत्त्व है। रक्षाबंधन के दिन बहने भगवान से अपने भाईयों की तरक्की के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। राखी सामान्यतः बहनें भाई को ही बाँधती हैं परन्तु ब्राह्मणों, गुरुओं और परिवार में छोटी लड़कियों द्वारा सम्मानित सम्बंधियों (जैसे पुत्री द्वारा पिता को) भी बाँधी जाती है। कभी–कभी सार्वजनिक रूप से किसी नेता या प्रतिष्ठित व्यक्ति को भी राखी बाँधी जाती है।

प्रकृति संरक्षण हेतु वृक्षों को राखी बाँधने की परम्परा भी प्रारम्भ हो गयी है। हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुरुष सदस्य परस्पर भाईचारे के लिये एक दूसरे को राखी बाँधते हैं। हिन्दू धर्म के सभी धार्मिक अनुष्ठानों में रक्षासूत्र बाँधते समय आचार्य संस्कृत में एक श्लोक का उच्चारण करते हैं, जिसमें रक्षाबन्धन का सम्बन्ध राजा बलि से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। भविष्यपुराण के अनुसार इन्द्राणी द्वारा निर्मित रक्षासूत्र को देवगुरु बृहस्पति ने इन्द्र के हाथों बांधते हुए स्वस्तिवाचन

येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः।तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल ॥

रक्षा बन्धन सनातन पर्व है। भविष्य पुराण में वर्णन मिलता है कि देव और दानवों में जब युद्ध शुरू हुआ तब दानव हावी होते नज़र आने लगे। भगवान इन्द्र घबरा कर बृहस्पति के पास गये। वहां बैठी इन्द्र की पत्नी इंद्राणी सब सुन रही थी। उन्होंने रेशम का धागा मन्त्रों की शक्ति से पवित्र करके अपने पति के हाथ पर बाँध दिया। संयोग से वह श्रावण पूर्णिमा का दिन था। लोगों का विश्वास है कि इन्द्र इस लड़ाई में इसी धागे की मन्त्र शक्ति से ही विजयी हुए थे। उसी दिन से श्रावण पूर्णिमा के दिन यह धागा बाँधने की प्रथा चली आ रही है। यह धागा धन, शक्ति, हर्ष और विजय देने में पूरी तरह समर्थ माना जाता है।

इतिहास मे कृष्ण और द्रौपदी की कहानी प्रसिद्ध है, जिसमे युद्ध के दौरान श्री कृष्ण की उंगली घायल हो गई थी, श्री कृष्ण की घायल उंगली को द्रौपदी ने अपनी साड़ी मे से एक टुकड़ा बाँध दिया था, और इस उपकार के बदले श्री कृष्ण ने द्रौपदी को किसी भी संकट मे द्रौपदी की सहायता करने का वचन दिया था।

दानवेन्द्र राजा बलि ने जब 100 यज्ञ पूर्ण कर स्वर्ग का राज्य छीनने का प्रयत्न किया तो इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। तब भगवान वामन अवतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर राजा बलि से भिक्षा माँगने पहुँचे। गुरु के मना करने पर भी बलि ने तीन पग भूमि दान कर दी। भगवान ने तीन पग में सारा आकाश पाताल और धरती नापकर राजा बलि को रसातल में भेज दिया। इस प्रकार

भगवान विष्णु द्वारा बलि राजा के अभिमान को चकनाचूर कर देने के कारण यह त्योहार बलेव नाम से भी प्रसिद्ध है। कहते हैं एक बार बलि रसातल में चला गया तब बलि ने अपनी भक्ति के बल से भगवान को रात–दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया। भगवान के घर न लौटने से परेशान लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय बताया। उस उपाय का पालन करते हुए लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबन्धन बांधकर अपना भाई बनाया और अपने पति भगवान विष्णु को अपने साथ ले आयीं। उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी। विष्णु पुराण के एक प्रसंग में कहा गया है कि श्रावण की पूर्णिमा के दिन भगवान विष्णु ने हयग्रीव के रूप में अवतार लेकर वेदों को ब्रह्मा के लिये फिर से प्राप्त किया था। भगवान हयग्रीव को विद्या और बुद्धि का प्रतीक माना जाता है।

उत्तरांचल में इसे श्रावणी कहते हैं। इस दिन यजुर्वेदी द्विजों का उपकर्म होता है। उत्सर्जन, स्नान–विधि, ऋशि–तर्पणादि करके नवीन यज्ञोपवीत धारण किया जाता है। ब्राह्मणों का यह सर्वोपरि त्यौहार माना जाता है। वृत्तिवान् ब्राह्मण अपने यजमानों को यज्ञोपवीत तथा राखी देकर दक्षिणा लेते हैं।

अमरनाथ की अतिविख्यात धार्मिक यात्रा गुरु पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर रक्षाबन्धन के दिन सम्पूर्ण होती है। कहते हैं इसी दिन यहाँ का हिमानी शिवलिंग भी अपने पूर्ण आकार को प्राप्त होता है। इस उपलक्ष्य में इस दिन अमरनाथ गुफा में प्रत्येक वर्ष मेले का आयोजन भी होता है।

महाराष्ट्र राज्य में यह त्योहार नारियल पूर्णिमा या श्रावणी के नाम से विख्यात है। इस दिन लोग नदी या समुद्र के तट पर जाकर अपने जनेऊ बदलते हैं और समुद्र की पूजा करते हैं। इस अवसर पर समुद्र के स्वामी वरुण देवता को प्रसन्न करने के लिये नारियल अर्पित करने की परम्परा भी है। यही कारण है कि इस एक दिन के लिये मुंबई के समुद्र तट नारियल के फलों से भर जाते हैं।

राजस्थान में रामराखी और चूड़ाराखी या लूंबा बाँधने का रिवाज़ है। रामराखी सामान्य राखी से भिन्न होती है। इसमें लाल डोरे पर एक पीले छींटों वाला फुँदना लगा होता है। यह केवल भगवान को ही बाँधी जाती है। चूड़ा राखी भाभियों की चूड़ियों में बाँधी जाती है। जोधपुर में राखी के दिन केवल राखी ही नहीं बाँधी जाती, बल्कि दोपहर में पद्मसर और मिनकानाडी पर गोबर(ख), मिट्टी(ग) और भस्मी(घ) से स्नान कर शरीर को शुद्ध किया जाता है। इसके बाद धर्म तथा वेदों के प्रवचनकर्त्ता अरुंधती, गणपति, दुर्गा, गोभिला तथा सप्तर्षियों के दर्भ के चट (पूजास्थल) बनाकर उनकी मन्त्रोच्चारण के साथ पूजा की जाती हैं। उनका तर्पण कर पितृ ऋण चुकाया जाता है। धार्मिक अनुष्ठान करने के बाद घर आकर हवन किया जाता है, वहीं रेशमी डोरे से राखी बनायी जाती है। राखी को कच्चे दूध से अभिमन्त्रित करते हैं और इसके बाद ही भोजन करने का प्रावधान है।

तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र और उड़ीसा के दक्षिण भारतीय ब्राह्मण इस पर्व को अवनि अवित्तम कहते हैं। यज्ञोपवीतधारी ब्राह्मणों के लिये यह दिन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस दिन नदी या समुद्र के तट पर स्नान करने के बाद ऋषियों का तर्पण कर नया यज्ञोपवीत धारण किया जाता है। गये वर्ष के पुराने पापों को पुराने यज्ञोपवीत की भाँति त्याग देने और स्वच्छ नवीन यज्ञोपवीत की भाँति नया जीवन प्रारम्भ करने की प्रतिज्ञा ली जाती है। इस दिन यजुर्वेदीय ब्राह्मण 6 महीनों के लिये वेद का अध्ययन प्रारम्भ करते हैं। इस पर्व का एक नाम उपक्रमण भी है जिसका अर्थ है– नयी शुरुआत। व्रज में हरियाली तीज (श्रावण शुक्ल तृतीया) से श्रावणी पूर्णिमा तक समस्त मन्दिरों एवं घरों में ठाकुर झूले में विराजमान होते हैं। रक्षाबन्धन वाले दिन झूलन–दर्शन समाप्त होते हैं।

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
अगस्त प्रथम अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति मा0 जगदीप धनखड़ का स्वागत अभिनन्दन

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी